Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ۝

(सूरः अल् बकरः : 164)

अनुवाद : नेक बात कहना और माफ़ करना उस सदक़े से बेहतर है जिसके बाद नुक़्सान हो। और अल्लाह अत्यन्त दयावान (और) सहनशील है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-19

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 शवाल 1444 हिज्री कमरी, 11 हिजरत 1402 हिज्री शम्सी, 11 मई 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

(2377) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार को बुलाया इस लिए कि उनको बेहरीन में जागीरें दें तो उन्होंने कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमे देते हैं तो हमारे भाई क़ुरैशियों को भी वैसी ही जागीरें दीजिए। परंतु उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास और नहीं थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम मेरे बाद अनक़रीब देखोगे कि तुम पर दूसरे मुक़द्दम किए जाऐंगे। उस वक़्त तुम सब्र करना, यहां तक कि मुझ से मिलो।

अल्लाह तआला अंसार रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाता है يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ (अल्-हशर : 10) जो लोग हिज्रत करके अंसार रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए हैं उनसे वह मुहब्बत रखते हैं और अपने दिलों में इस (माल) की कोई ख़ाहिश नहीं रखते थे जो इन (मुहाजेरीन रज़ियल्लाहु अन्हो) को दिया गया और वह उनको अपने नफ़सों पर तर्जीह देते हैं। जबकि वह स्वयं ज़रूरतमंद हों।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब फ़रमाते हैं कि मुंदरजा बाला हदीस से साबित होता है कि क़ुरआन-ए-मजीद का वर्णन करदा वस्फ़ अंसार पर पूरे तौर पर सादिक़ है।

(सही अल्बुख़ारी, भाग 4 किताब अल्मसाका, प्रकाशित 2008 कादियान)

★ ★ ★

एक सच्चा मुस्लमान न मग़ज़ूब हो सकता है न ज़ालीन के ज़मुरा में शामिल हो सकता है मग़ज़ूब वह क़ौम है जिस पर ख़ुदा तआला का ग़ज़ब भड़का और ज़ाल से मुराद ईसाई हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इस्लाम धर्म चूँकि एतेदाल पर वाक़्य हुआ है इसलिए अल्लाह तआला ने तालीम यही दी है और मग़ज़ूब और ज़ालेन से बचने की हिदायत फ़रमाई है। एक सच्चा मुस्लमान न मग़ज़ूब हो सकता है न ज़ालेन के ज़मुरा में शामिल हो सकता है। मग़ज़ूब वह क़ौम है जिस पर ख़ुदा तआला का ग़ज़ब भड़का। चूँकि वह ख़ुद ग़ज़ब करने वाले थे इसलिए ख़ुदा के ग़ज़ब को खींच लाए और वे यहूदी हैं और ज़ाल से मुराद ईसाई हैं।

ग़ज़ब की कैफ़ीयत क़ुव्वत सबई से पैदा होती है और ज़लालत वहमी क़ुव्वत से पैदा होती है। और वहमी क़ुव्वत हद से ज़्यादा मुहब्बत से पैदा होती है। बे-जा मुहब्बत वाला इन्सान बहक जाता है حُبُّكَ الشَّيْءَ يُعْمِيْ وَيُصِمُّ इस का उद्गम स्रोत और उद्देश्य क़ुव्वत वहमी है। इसकी मिसाल यह है कि चादर को बैल समझता है और रस्सी को साँप बनाता है। यही वजह है कि किसी शायर ने अपना माशूक़ ऐसा क़रार नहीं दिया जो दूसरों से बढ़कर न हो। प्रत्येक के भ्रम ने नई तस्वीर ईजाद की।

क़ुव्वत-ए-बहीमी में जोश हो कर इन्सान जादा-ए-एतिदाल से निकल जाता है : इस लिए ग़ज़ब की हालत में दरिन्दे का जोश बढ़ जाता है। उदाहरणतः कुत्ता पहले आहिस्ता-आहिस्ता भौंकता है फिर कोठा सिर पर उठा लेता है। आख़िर कार दरिंदे तैश में आकर नोचते और फाड़ खाते हैं। यहूद ने भी इसी तरह ज़ुलम व ताअद्दी की बुरी आदतें इख़्तेयार कीं और ग़ज़ब को हद तक पहुंचा दिया। आख़िर ख़ुद मग़ज़ूब हो गए। क़ुव्वत-ए-वहमी को जब ग़ल्बा होता है तो इन्सान रस्सी को साँप बनाता और दरख़्त को हाथी बतलाता है और इस पर कोई दलील नहीं होती। यह क़ुव्वत औरतों में ज़्यादा होती है। इसी वास्ते ईसाई मज़हब और बुतपरस्ती का बड़ा सहारा औरतें हैं। उद्देश्य इस्लाम ने जादा एतेदाल पर रहने की तालीम दी जिसका नाम اَلصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 456 प्रकाशित कादियान 2003)

★ ★ ★

अंबिया की जमाअतों की तरक़्क़ी और इबतेला यह दो जुड़वे भाई हैं जो एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते
जब तक कोई क़ौम मरने के लिए तैयार न हो वह ज़िंदा नहीं हो सकती क्योंकि ज़िंदगी मौत के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

उद्देश्य यह कि बाद दीगरे उन लोगों (यानी सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम -नाकिल) ने मौत को क़बूल किया और मौत में ही अपनी सारी कामयाबी समझी। यही चीज़ थी जिसकी वजह से वह थोड़े समय में सारी दुनिया पर ग़ालिब आगए और ऐसी शान से ग़ालिब आए कि इस की मिसाल पहली किसी क़ौम में नहीं मिलती। फिर देख लू मसायब का यह सिलसिला जल्दी ख़त्म नहीं हो गया बल्कि एक लंबे अरसा तक जारी रहा। ख़िलाफ़त क़ायम हुई तो हज़रत अमर रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए । हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए । हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए और कर्बला के मैदान में तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़रीबन सारा ख़ानदान ही शहीद हो गया। कुछ लोग ग़लती से यह समझते हैं कि इबतेला सिर्फ़ इबतेदाई ज़माना में आते हैं, तरक़्क़ी के ज़माना में इबतेलाओं का सिलसिला बंद हो जाता है परंतु यह दरुस्त नहीं। अंबिया की जमाअतों की तरक़्क़ी और अब्तेला दो जुड़वा भाई हैं जो एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते। इबतेदा से इबतेदाई ज़माना में भी इबतेला आते हैं और तरक़्क़ी के इंतेहाई ज़माना में भी इबतेला आते हैं। इस तरह इब्तेदा से इंतेहा तक इबतेलाओं का सिलसिला जारी रहता है। जब नबी एक मुनफ़रद वजूद होता है और इस पर सिर्फ एक या दो आदमी ईमान लाने वाले होते हैं, उस वक़्त भी इबतेला आते हैं और इंतेहाई उरूज के वक़्त जब सिलसिला को तरक़्क़ी पर तरक़्क़ी हासिल हो रही होती है उस वक़्त भी इबतेला आते हैं। मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहले दिन भी मसायब और मुश्किलात में से गुज़रना पड़ा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप पर ईमान लाने वालों को मुख़्तलिफ़ किस्म के इबतेला पेश आए और इस के बाद जब प्रगति का ज़माना आया उस वक़्त भी इन इबतेलाओं का सिलसिला जारी रहा । यह नहीं हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ज़िंदगी में किसी दिन इस ख़्याल के साथ सोए हो कि अब समस्त मुश्किलात पर क़ाबू पा लिया गया है। और वह समस्त मसाइल जो मुस्लमानों की तरक़्क़ी

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दीन और शरीयत को कामिल किया, मुकम्मल किया तो क़ुरआन-ए-करीम में यह फ़रमाया कि

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

यह दावा सिर्फ़ इस्लाम का है किसी दूसरे मज़हब का नहीं कि अब आख़िरी दीन इस्लाम ही है जो अल्लाह तआला का दीन है

अल्लाह तआला यह ऐलान फ़र्मा रहा है कि क़ुरआनी तालीम ही है जो अब इन्सान की अख़लाक़ी और रुहानी तरक़्क़ी का ज़रीया है

जो कुछ भी इन्सान की ज़रूरियात थीं उनको हर लिहाज़ से पूरा करने वाला केवल क़ुरआन-ए-करीम है, कोई ऐसी ज़रूरत नहीं जिसका क़ुरआन--ए-करीम ने अहाता न किया हो

इससे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने का उद्देश्य भी पूरा हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वह कामिल और आख़िरी नबी हैं जिन पर इस कमाल दर्जा की शरीयत नाज़िल हुई

अतः यह हमारा अक़ीदा है और इस पर हमें ईमान है

हमारी बैअत का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम इस उद्देश्य को अपने सामने रखेंगे

इसके लिए हमें क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और समझने की तरफ़ हमेशा तवज्जा रखनी चाहिए, इसके लिए बेहतरीन ज़रीया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब और इर्शादात हैं

अगर हम में से प्रत्येक इस रमज़ान में इस पर अमल करने का अह्द कर ले और क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात पर अमल करने का एक पक्का इरादा कर ले

तो जहां हम अपनी रूहानियत में तरक़्क़ी कर रहे होंगे वहां हमारा समाज भी एक जन्नत नज़ीर समाज बन रहा होगा

घरों और ख़ानदानों के झगड़े जो मुख़्तलिफ़ वक़्तों में पैदा होते रहते हैं मुहब्बत और प्यार में बदल सकते हैं

क़ुरआन-ए-करीम की तालीम में यह ख़ूबी भी है कि हर ज़माने की जो बुराईयां पैदा हो रही हैं

इस का ईलाज इसी तालीम में मिल जाता है जो मुफ़स्सेरीन के ज़रीया से, अल्लाह तआला के नेक बंदों के ज़रीया से हमें पता लगता रहता है

यह भी क़ुरआनी तालीम का ख़ास्सा है कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर कामिल अमल करने वाले ही ग़ैरमामूली बरकात हासिल करने वाले हैं

क़ुरआन-ए-करीम चमत्कार है जिसकी मिसल कोई इंसान और जिन् नहीं ला सकता और इस में वे मआरिफ़ और ख़ूबियां जमा हैं जिन्हें इन्सानी इलम जमा कर सकता

"क़ुरआन-ए-करीम तंग दस्तों को सदक़ात देता और सारी तंगियाँ दूर करता बल्कि इख़लास वालों को सोने की डलियां देता है"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया ही क़ुरआनी उलूम के मआरिफ़ हम तक हैं और

आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की मुकम्मल की पैरवी की है और हमें क़ुरआन-ए-करीम का हक़ीक़ी इर्फ़ान अता फ़रमाया है

ये लोग जो अपनी हठधर्मी से बाज़ नहीं आते या नहीं आ रहे ख़ुदा बग़ैर मुवाख़िज़ा के नहीं उनको छोड़ेगा

किस तरह वह पकड़ेगा, किस तरह उसने मुवाख़ज़ा करना है यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है

"आज समस्त ज़मीन पर सब इल्हामी किताबों में से एक फ़ुर्क़ान-ए-मजीद ही है कि उसका कलाम-ए-इलाही होना अकाट्य तर्कों से साबित है"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अल्लाह तआला हमें क़ुरआन-ए-करीम पर हक़ीक़ी तौर पर अमल करने वाला और उसकी तालीम के मुताबिक़ अमल करने वाला, उसको समझने वाला और अपनी ज़िंदगियां उसके मुताबिक़ व्यतीत करने वाला बनाए

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुर मआरिफ़ इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन करीम के कामिल और मुकम्मल होने का वर्णन

मुख़ालेफ़ीन के उपद्रव से महफ़ूज़ रहने, दुनिया के उमूमी हालात और फ़लस्तीन के मुस्लमानों के लिए रमज़ानुल मुबारक में दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

-اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ

الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दीन और शरीयत को कामिल किया, मुकम्मल किया तो क़ुरआन-ए-करीम में यह ऐलान फ़रमाया कि اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अल्-मायद : 4)आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम में अपनी नेअमत समस्त कर दी और मैंने इस्लाम को तुम्हारे लिए दीन के तौर पर पसंद कर लिया। अतः यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है मुस्लमानों पर कि उनके लिए एक कामिल और मुकम्मल शरीयत अता फ़रमाई और यह दावा सिर्फ़ इस्लाम का है किसी दूसरे मज़हब का नहीं कि अब आख़िरी दीन इस्लाम ही है जो अल्लाह तआला का पसंदीदा दीन है और अगर अल्लाह तआला की रज़ा चाहिए तो इस्लाम क़बूल किए बग़ैर, उस की तालीम पर अमल किए बग़ैर कोई चारा नहीं।

अल्लाह तआला यह ऐलान फ़र्मा रहा है कि क़ुरआनी तालीम ही है जो अब इन्सान की अख़लाक़ी और रुहानी तरक़्क़ी का वाहिद ज़रीया है बल्कि यह तालीम

इस क़दर कामिल है कि माद्दी तरक़्क़ी के रास्तों के लिए भी अब यही तालीम है और उनकी तरफ़ लेकर जाती है। अतः जब अल्लाह तआला इस तालीम के मुताल्लिक़ اَکۡمَلۡتُ का ऐलान फ़रमाता है तो इस का मतलब है कि इन्सान की तमाम-तर सलाहियतें अख़लाक़ी हों, रुहानी हों या जस्मानी, उनका हुसूल क़ुरआन-ए-करीम पर

अमल करने से ही हो सकता है और इसकी कामिल तालीम जो है अगर उस प रहक़ीक़ी अमल करना है तो सिर्फ क़ुरआन-ए-करीम से मिल सकती है। और اَتۡمَمۡتُ कह कर यह ऐलान फ़रमाया और पूरी क़ुव्वत से फ़र्मा दिया कि जो कुछ भी इन्सान की ज़रूरियात थीं उनको हर लिहाज़ से पूरा करने वाला सिर्फ़ क़ुरआन-ए--करीम है। कोई ऐसी ज़रूरत नहीं जिसका क़ुरआन-ए-करीम ने अहाता न किया हो चाहे वह इन्सान की माद्दी ज़रूरियात हैं या रुहानी और अख़लाक़ी मयारों को हासिल करने की ज़रूरीयात और तरीक़े हैं। जो भी एक इन्सान इन्साफ़ की नज़र से देखना चाहे वह क़ुरआन-ए-करीम की तालीम में मौजूद है। अतः इस आयत के साथ क़ुरआन-ए-करीम ने यह ऐलान फ़र्मा दिया कि अब इन्सान की बक़ा इस तालीम के साथही वाबस्ता है और यह तालीम समस्त युगों और समस्त दुनिया के इन्सानों के लिए है और क़ुरआन-ए-करीम से पहले नाज़िल होने वाली समस्त तालीमात जो मुख़्तलिफ़ अंबिया पर उतरीं वह वक़्ती और इस ज़माने के लिहाज़ से थीं समस्त इन्सानियत के लिए थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस की वज़ाहत में यह भी ऐलान फ़रमाया कि इस से यह साबित होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने का उद्देश्य भी पूरा हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही वह कामिल और आख़िरी नबी हैं जिन पर इस कमाल दर्जा की शरीयत नाज़िल हुई। अतः यह हमारा अक़ीदा है और इस पर हमें ईमान है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर एतराज़ करने वाले ये एतराज़ करते हैं कि जब यह अक़ीदा है और क़ुरआन-ए-करीम को आख़िरी शरीयत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं तो फिर आप के दावे की क्या हैसियत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा फिर क्या है और आप की फिर उस ज़माने में आने की ज़रूरत ही क्या थी? इस के मुख़्तलिफ़ जवाब हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह इस का जवाब इस तरह भी फ़रमाया है कि अगर तुम इस्लामी तालीम पर अमल कर रहे होते तो फिर ठीक है मेरे आने की कोई ज़रूरत नहीं थी लेकिन ज़माने की उमूमी हालत और खासतौर पर मुस्लमानों की अपनी हालत इस बात का ऐलान कर रही है कि किसी मुअल्लिम की ज़रूरत है।

फिर उस तालीम को भूल जाने के बारे में ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था और इसकी इस्लाह के लिए यह भी फ़रमाया था कि हर सदी में मुजद्दिद आएँगे। यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मुस्लमान क़ुरआन की तालीम कामिल होने के बावजूद इस तालीम को भूल जाऐंगे, नई बिदआत उनमें पैदा हो जाएँगी इसलिए तजदीद दीन के लिए मुजद्दिद आते रहेंगे और आख़िरी ज़माने में मसीह मौऊद और महदी माहूद आएँगे जो दीन को सुरय्या से ज़मीन पर लाएँगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने लिटरेचर में, तहरीरात में, कुतुब में, हर जगह यह फ़रमाया है कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शरीयत और दीन और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम को दुनिया में फैलाने आया हूँ और अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया दीन पूर्ण हो चुका है। उसे और इसी तालीम को ही दुनिया के हर कोने में पहुंचाने आया हूँ। तालीम की तकमील क़ुरआन-ए-करीम के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने से हुई और इस ज़माने में क्योंकि इशाअत--ए-हिदायत और तालीम के वसायल नहीं थे इसलिए उस की इशाअत के लिए इस ज़माने में अपने वादे के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ को भेजा। अतः यही काम है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सरअंजाम दिया और इसी के जारी रखने के लिए जमात अहमदिया का क़ियाम अमल में आया। और यही काम है जो जमाअत अहमदिया आप के दिए हुए लिटरेचर और आप की वर्णन करदा क़ुरआनी तफ़सीर के मुताबिक़ कर रही है और इस बात पर हर अहमदी को ग़ौर करना चाहिए कि इस उद्देश्य को हम किस हद तक पूरा कर रहे हैं। एक तो मजमूई तौर पर प्रोग्राम हैं और हो रहे हैं लेकिन इन्फ़रादी तौर पर भी चाहिऐं। अतः हमारी बैअत का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम इस उद्देश्य को अपने सामने रखेंगे। इस के लिए हमें क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और समझने की तरफ़ हमेशा तवज्जा रखनी चाहिए। इस के लिए बेहतरीन ज़रीया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब और इर्शादात हैं।

क़ुरआन-ए-करीम के मुहासिन-ओ-ख़ूबियां में कुछ अरसा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में वर्णन कर रहा हूँ। आज भी क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की तकमील के बारे में आप अलैहिस्स-लाम के कुछ इर्शादात पेश करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "यह बात साबित शूदा है कि क़ुरआन शरीफ़ ने दीन के कामिल करने का हक़ अदा कर दिया है जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है اَلۡیَوۡمَ اَکۡمَلۡتُ لَکُمۡ دِیۡنَکُمۡ وَ اَتۡمَمۡتُ عَلَیۡکُمۡ نِعۡمَتِیۡ وَ رَضِیۡتُ لَکُمُ الۡاِسۡلَامَ دِیۡنًا

(अल् मायद : 4) आर्थत आज मैं ने तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए कामिल कर दिया है और अपनी नेअमत तुम पर पूरी कर दी है और मैं इस्लाम को तुम्हारा दीन मुक़र्रर करके ख़ुश हुआ। अतः क़ुरआन शरीफ़ के बाद किसी किताब को क़दम रखने की जगह नहीं क्योंकि जिस क़दर इन्सान की हाजत थी वह सब कुछ कुरान-- ए --शरीफ़ वर्णन कर चुका अब केवल मुकालमात-ए-इलाही का दरवाज़ा खुला है।" हाँ मुकालमात इलाही का दरवाज़ा खुला है। अल्लाह तआला बंदों से, अपने ख़ास बंदों से कलाम करता है। कोई नई तालीम नहीं है।" और वह भी ख़ुद बख़ुद नहीं" खुल गया फ़रमाया "बल्कि सच्चे और पाक मुकालमात जो स्पष्ट और खुले तौर पर नुसरत इलाही का रंग अपने अंदर रखते हैं और बहुत से उमूर ग़ैबिया पर मुश्तमिल होते हैं वह बाद तज़किया नफ़्स महिज़ पैरवी कुरान-ए-शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण से हासिल होते हैं।" (चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी खजायन भाग 23 पृष्ठ 80)क़ुरआन-ए-करीम क्योंकि कामिल किताब है इसलिए अब उस की पैरवी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कामिल इत्तिबा के ज़रीया से ही अल्लाह तआला से ताल्लुक़ के ये रास्ते खुले हैं। इस के इलावा कोई रस्ता नहीं, कोई ज़रीया नहीं और आप को भी जो मुक़ाम मिला आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे इसी वजह से मिला है।

फिर क़ुरआन-ए-करीम के कामिल हिदायत होने के बारे में आप अलैहिस्सलाम एक जगह मज़ीद फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ सिर्फ इतना ही नहीं चाहता कि इन्सान तर्क-ए-शर कर के समझ ले कि बस अब मैं साहिब -ए- कमाल हो गया।" बुराईयां छोड़ दें तो कमाल नहीं हासिल हो गया" बल्कि वह तो इन्सान को आला दर्जा के कमालात और अख़लाक़-ए-फाज़िला से मुत्तसिफ़ करना चाहता है।" तो क़ुरआन-ए-करीम सिर्फ़ बुराईयां नहीं छुड़वाना चाहता बल्कि आला दर्जा के कमालात और अख़लाक़ फाज़ला इन्सान में पैदा करना चाहता है अर्थात बुराईयां भी छोड़नी हैं और फिर उसकी जगह आला अख़लाक़ भी इख़तेयार करने हैं" कि इस से ऐसे आमाल-ओ-अफ़आल सरज़द हों जो बनीनौ की भलाई और हमदर्दी पर मुश्तमिल हों और उनका नतीजा यह हो कि अल्लाह तआला उस से राज़ी हो जाए।" (मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 270 ऐडीशन 1984 ई.) यह नतीजा निकलना चाहिए कि अल्लाह तआला राज़ी हो जाए

अतः यह सोच है जो हम में क़ुरआन-ए-करीम की तालीम के मुताबिक़ पैदा होनी चाहिए।

हम अपने जायज़े लें कि क्या यह सोच हमारी है। हम सिर्फ दूसरों की तरह पढ़ने का दावा कर रहे हैं या वाक़ई यह तबदीलियां भी पैदा हो रही हैं, अल्लाह तआला से ख़ास ताल्लुक़ भी हमारा पैदा हो रहा है।

रमज़ान में भी क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा जाता है। दरस भी सुनते हैं। अतः उसको ज़िंदगी में लागू करना भी ज़रूरी है। और हमने तो अपने अहद बैअत में भी यह अहद किया हुआ है दस शरायत हैं उनमें यह लिखा हुआ है कि "क़ुरआन शरीफ़ की हुकूमत को पूर्णतः अपने सिर पर क़बूल कर लेगा।" (इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 564)

अतः अगर हम में से प्रत्येक इस रमज़ान में इस पर अमल करने का अहद कर ले और क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात पर अमल करने का एक पक्का इरादा कर ले तो जहां हम अपनी रूहानियत में तरक़्क़ी कर रहे होंगे वहां हमारा समाज भी एक जन्नत नज़ीर समाज बन रहा होगा। घरों और ख़ानदानों के झगड़े जो मुख़्तलिफ़ वक़्तों में पैदा होते रहते हैं मुहब्बत और प्यार में बदल सकते हैं।

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि इलाही शरीयत का बीज क़ुरआन-ए-

-करीम के ज़माने में अपने कमाल को पहुंच गया फ़रमाते हैं "चूँकि क़ुरआन शरीफ़ अच्छी बातों का आदेश देता है और बुरी बातों से रोकने में कामिल है।" जो काम करने वाले हैं उनकी हिदायत देने में और जिन से रोका गया है उनके बारे में बताने में कामिल है ,मुकम्मल तौर पर बता दिया है कि क्या करना है क्या नहीं करना"और ख़ुदा ने इस में यही इरादा किया है कि जो कुछ इन्सानी फ़ित्रत में इंतेहा तक बिगाड़ हो सकता है और जिस क़दर गुमराही और बद अमली के मैदानों में वह आगे से आगे बढ़ सकते हैं इन समस्त ख़राबियों की क़ुरआन शरीफ़ के ज़रीया से इस्लाह की जाये इस लिए ऐसे वक़्त में उसने क़ुरआन शरीफ़ को नाज़िल किया कि जबकि इन्सान में ये समस्त ख़राबियां पैदा हो गई थीं और रफ़्ता-रफ़्ता इन्सानी हालत ने प्रत्येक बदअ-क़ीदा और बद-अमल से आलूदगी इख़्तेयार कर ली थी और यही हिकमत-ए-इला-ही का तक़ाज़ा था कि ऐसे वक़्त में इस का कामिल कलाम नाज़िल हो क्योंकि ख़राबियों के पैदा होने से पहले ऐसे लोगों को इन जरायम और बद अक़ायद की सूचना देना कि वह उनसे पूर्णतः बे ख़बर हैं यह गोया उनको उन गुनाहों की तरफ़ ख़ुद मीलान है।" पहले ही बता देना कि ये ये गुनाह हैं और जिनका उनको पता ही नहीं, तसव्वुर ही कोई नहीं है तो इस चीज़ से फिर गुनाह फैलते हैं। आजकल हम यही देखते हैं। निज़ाम-ए-तालीम में बच्चों को जिन्सी ताल्लुक़ात के बारे में ऐसी बातें बताई जाती हैं जिनका बच्चों को कोई तसव्वुर ही नहीं है। वे परेशान हैरान होते हैं। अब तो माता पिता ने भी कहना शुरू कर दिया है कि यह क्या पढ़ाया जा रहा है बल्कि उसी का नोटिस लेते हुए महकमा तालीम ने भी नोटिस लिया है। बाअज़ अध्यापक हद से ज़्यादा आगे बढ़ गए हैं कि ऐसी बातें जिनका पता ही नहीं, तसव्वुर नहीं, जो उनकी बलूग़त की उम्र को पहुंचने तक उनको पता होनी चाहिऐं वह ख़ुद उनमें पैदा की जा रही हैं तो यही क़ानून-ए-शरीयत और इन्सानी क़ानून में फ़र्क़ है। यही क़ानून और क़ुरआन-ए-करीम की हिदायत में फ़र्क़ है कि क़ुरआन-ए-करीम हिदायत देता है और वाज़िह भी करता है कि इस उम्र की यह हिदायत और इस उम्र की यह हिदायत है। यह नहीं कि हर चीज़ को खोल के वर्णन कर दिया और फिर तफ़सीरें जो हैं वह प्रत्येक की अक़्ल और समझ के मुताबिक़ आहिस्ता-आहिस्ता उन्ही अल्फ़ाज़ में से निकलती चली आती हैं।

तो फ़रमाया "अतः ख़ुदा की वह्यी हज़रत-ए-आदम से तुख़्म-रेज़ी की तरह शुरू हुई और वह तुख़्म ख़ुदा की शरीयत का क़ुरआन शरीफ़ के ज़माना में अपने कमाल को पहुंच कर एक बड़े दरख़्त की तरह हो गया।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 219-220)

अतः जिस तरह बुराईयां फैलती रहीं उनका ईलाज भी ज़माने के लिहाज़ से ज़ाहिर होता रहा और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम में यह ख़ूबी भी है कि हर ज़माने की जो बुराईयां पैदा हो रही हैं इस का ईलाज इसी तालीम में मिल जाता है जो मुफ़-स्सेरीन के ज़रीया से, अल्लाह तआला के नेक बंदों के ज़रीया से हमें पता लगता रहता है।

फिर फ़रमाया कि "चूँकि कामिल किताब ने आकर कामिल इस्लाह करनी थी। ज़रूर था कि इस के नुज़ूल के वक़्त उसके जाए नुज़ूल में बीमारी भी कामिल तौर पर होता कि प्रत्येक बीमारी का कामिल ईलाज मुहय्या किया जाए। अत :इस जज़ीरा में कामिल तौर से बीमार .. थे और जिनमें वे समस्त रुहानी बीमारियां मौजूद थीं" यानी अरब में "जो उस वक़्त या उस के बाद आइंदा नसलों को लाहक़ होने वाली थीं" इस में मज़ीद वज़ाहत हो गई। जो उस वक़्त मौजूद थीं या आइन्दा नसलों में लाहक़ होने वाली थीं उनकी तालीम दे दी। क्योंकि ज़माना दूर नहीं जाना था, शरीयत कामिल हो रही थी इसलिए जो आइन्दा हो सकती थीं उनकी भी वज़ाहत कर दी और बता दिया किस हद तक कहाँ तक तुमने खोलना है। किस तरह तुम्हें खुलता जाएगा और इस लिए मुफ़स्सेरीन इसी तरह ज़माने के लिहाज़ से तशरीह करते चले गए। फ़रमाया कि"यही वजह थी कि क़ुरआन शरीफ़ ने समस्त शरीयत की तकमील की" और किताबों के नाज़िल होने के वक़्त न यह ज़रूरत थी और"दूसरी किताबों के नुज़ूल के वक़्त न यह ज़रूरत थी। न उनमें ऐसी कामिल तालीम है।"(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 38 ऐडीशन 1984 ई. आप ने यहां यह साबित फ़रमाया कि ख़ुद ईसाई और यहूदी इस बात का एतराफ़ करते हैं कि ज़माना हर लिहाज़ से इंतेहाई बिगड़ा हुआ था और इस वक़्त एक शरीयत की ज़रूरत थी।

यह वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम हरगिज़ किसी इन्सानी कलाम के मुशाबेह नहीं हो सकता आप उस को समझाते हुए, मिसाल देते हुए फ़रमाते हैं कि "जब चंद मुतकल्लेमीन इंशा पर्दाज़ अपनी अपनी इलमी ताक़त के ज़ोर से एक ऐसा मज़मून लिखना चाहें" अच्छे बोलने वाले, अच्छे लिखने वाले अपनी इल्मी ताक़त के द्वारा से मज़मून लिखना चाहें "कि जो निरर्थक और असत्य और व्यर्थ और झूठ और अश्लीलता और प्रत्येक व्यर्थ की बात और तेज़ ज़बानी और दूसरे समस्त उमूर हिक्मत मे हस्तक्षेपी और आलंकारिक शैली और आफ़ात मुनाफ़ी कमालियत व जामियात से पूर्णतः पाक और हो।" अर्थात जो हर किस्म के, फ़ुज़ूल किस्म के झूठ, बनाई हुई बातें, व्यर्थ की बातें, बेहूदा बातें, ठट्ठे हंसी इत्यादि और प्रत्येक बेकार और बेहूदा बात और उलझी हुई पेचीदा बातें और ऐसी सारी बातें जिसमें हिक्मत भी न हो और बलाग़त भी न हो जिनकी इन्सान को समझ ही न आए और अच्छा लिखने वाला इन सब फ़ुज़ूलीयात से पाक बातें लिखने की कोशिश करता है। यही एक अच्छे लिखने वाले की निशानी है कि हर किस्म की बेहूदगियों से वह पाक हो, उसका कलाम मुनज़्ज़ह और पाक हो और फ़रमाया कि"और सरासर हक़ और हिक्मत और फ़साहत और बलाग़त और हक़ायक़ और मआरिफ़ से भरा हुआ हो तो ऐसे मज़मून के लिखने में" न सिर्फ वह पाक हो बल्कि मआरिफ़ से भरा हुआ भी हो। तो ऐसे मज़मून के लिखने में "वही शख़्स सबसे अव्वल दर्जा पर रहेगा कि जो इलमी ताक़तों और वुसअत मालूमात और आम वाक़फ़ीयत और गूढ़ रहस्यों का ज्ञान में सबसे आला और मश्क़ और वरज़िश-ए-अमला ओ- इंशा में सबसे ज़्यादा तर फ़र्सूदा रोज़गार हो" बड़ा अच्छा हो, पढ़ा लिखा हो, ज्ञानी हो, अनुभवी हो वही ऐसा मज़मून लिख सकता है जो इन सारी चीज़ों से पाक हो" और हरगिज़ मुम्किन न होगा कि जो शख़्स इस से इस्तिदाद में , इलम में, लियाक़त में, प्रतिभा में, ज़हन में, अक़्ल में कहीं फ़िरोतर और मतंज़िल है।" बहुत नीचे गिरा हुआ है। "वह अपनी तहरीर में مِنْ حَيْثُ الْكَمالات इस से बराबर हो जाए।" जिस में यह सलाहियतें नहीं वह उस के बराबर तो नहीं हो सकता। फ़रमाया कि "मसलन एक तबीब हाज़िक़ जो इल्म-ए--अबदान में महारत रखता है।" एक डाक्टर है, बड़ा expert डाक्टर है जिसको बड़ी महारत है।" जिसको ज़माना दराज़ की मश्क़ के बायस से तशख़ीस-ए-अमराज़ और तहक़ीक़-ए-अवारिज़ की पूरी पूरी वाक़फ़ियत हासिल है।" सही तरह वह diagnose कर लेता है, उस के जो रोग हैं उनका भी इस को मुकम्मल तौर पर इल्म है।" और इलावा उसके फ़न-ए-सुख़न में भी यकता है।" एक ज़ायद चीज़ है इस में कि अच्छा वक्ता भी है।" और नज़्म और नस्र में रोज़गार पैदा करता है।" बहुत अच्छा है, बहुत मुमताज़ है" जैसे वह एक मर्ज़ के हुदूस की कैफ़ीयत और इस की अलामात।" अर्थात जब मर्ज़ पैदा होता है इस की कैफ़ीयत और अलामात" और अस्बाब फ़सीह और वसीअ तक़रीर में बकमाल सेहत-ओ-हक़्क़ानियत और ब निहायत मतानेत-ओ--बलाग़त वर्णन कर सकता है। इस के मुक़ाबले पर कोई दूसरा शख़्स जिसको फ़न--ए-तबाबत से एक ज़रा ज्ञान नहीं और फ़न-ए-सुख़न की नज़ाकतों से भी अवगत नहीं है मुम्किन नहीं कि उस के जैसा वर्णन कर सके।" दूसरा शख़्स जिसमें यह ख़ूबियां पाई नहीं जातीं वह तो यह सारी बातें वर्णन नहीं कर सकता जितना कि एक इल्म रखने वाला जो अपने पेशा में भी महारत रखने वाला है और इस के इलावा वर्णन भी अच्छा कर लेता है और तहक़ीक़ भी करने वाला है वह उस की तरह नहीं हो सकता जिसका इल्म बहुत सीमित हो। वह बहरहाल इस से ऊपर है । फ़रमाया "यह बात बहुत ही स्पष्ट और समझ मे आने वाली है कि जाहिल और आक़िल की तक़रीर में ज़रूर कुछ न कुछ अंतर होता है और जिस क़दर इन्सान कमालात-ए--इल्मिया रखता है। वे कमालात ज़रूर उस की इल्मी तक़रीर में इस तरह पर नज़र आते हैं जैसे एक साफ़ आईन में चेहरा नज़र आता है। और हक़ और हिक्मत के वर्णन करने के वक़्त वे अल्फ़ाज़ कि जो उस के मुख से निकलते हैं इस की लियाकत--ए-इलमी का अंदाज़ा मालूम करने के लिए एक पैमाना तसव्वुर किए जाते हैं और जो बात वुसअते इल्म और कमाल-ए-अक़्ल के चशमा से निकलती है और जो बात तंग और मुनक़बिज़ और तारीक और महिदूद ख़्याल से पैदा होती है। इन दोनों तौर की बातों में इस क़दर फ़र्क़" है। एक इलम-ओ-इर्फ़ान का चशमा है एक बिल्कुल सतही किस्म की बातें हैं तो उनमें वाज़िह फ़र्क़ पता लग जाता है। फ़रमाते हैं कि "फ़र्क़ वाज़िह होता है कि जैसी सूंघने के शक्ति के आगे इस शर्त के कि किसी फ़ित्ती या आरिज़ी आफ़त से माऊफ़ न हो ख़ुशबू और बदबू में फ़र्क़ वाज़िह है। जहां तक तुम चाहो फ़िक्र कर लो और जिस हद तक चाहो सोच लो कोई ख़ामी उस सदाक़त में नहीं पाओगे।" यह बड़ी सच्ची बात है"और किसी तरफ़ से कोई रोक नहीं देखोगे अतः जबकि من كل الوجوه साबित है कि जो फ़र्क़ इलमी और अकली ताक़तों में मख़फ़ी

होता है वह ज़रूर कलाम में ज़ाहिर हो जाता है और हरगिज़ मुम्किन ही नहीं कि जो लोग من حَیثُ العقل والعلم افضل और उत्तम हैं वे फ़साहत बयानी और रिफ़अत मआनी में हो समान जाएं" इलम-ओ-इर्फ़ान वाले बहरहाल ऊपर रहेंगे। वे एक आम आदमी के बराबर नहीं हो सकते। "और कुछ इस अंतर के बाक़ी न रहे। तो इस सदाक़त का साबित होना इस दूसरी सदाक़त के सबूत को अनिवार्य है कि जो कलाम ख़ुदा का कलाम हो उस का इन्सानी कलाम से अपने ज़ाहिरी और बातिनी कमालात में बरतर और आला और अद्वितय होना ज़रूरी है।"

अतः इस मिसाल से यह साबित होता है कि अल्लाह तआला का कलाम तो उन सबसे आला है। अल्लाह तआला ही समस्त उलूम का अहाता किए हुए है। इस जितना इलम तो किसी को भी नहीं "क्योंकि ख़ुदा के इलम से किसी का इलम बराबर नहीं हो सकता। और इसी की तरफ़ ख़ुदा ने भी इशारा फ़र्मा कर कहा है। فَاِلَّمۡ یَسۡتَجِیۡبُوۡا لَکُمۡ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَاۤ اُنۡزِلَ بِعِلۡمِ اللّٰہِ (हूद : 15) ... यानी अगर कुफ़्फ़ार इस क़ुरआन की नज़ीर पेश न कर सकें और मुक़ाबला करने से आजिज़ रहें तो तुम जान लो कि यह कलाम इलम-ए-इन्सान से नहीं बल्कि ख़ुदा के इलम से नाज़िल हुआ है।" जब मिसाल पेश ही नहीं कर सकते तो फिर ज़ाहिर है कि इन्सान का कलाम नहीं यह ख़ुदा का कलाम है। "जिसके इल्म वसीअ और समस्त के मुक़ाबला पर उलूम इंसाने बे-हक़ीक़त और तुच्छ हैं इस आयत में बुरहान-ए-इन्नी की तर्ज़ पर-असर के वजूद को मोस्सर के वजूद की दलील ठहराई है।"फ़रमाते हैं "जिसका दूसरे लफ़्ज़ों में ख़ुलासा मतलब यह है कि इलम इलाही अपनी कमालियत के कारण और संक्षिप्ता के हरगिज़ इन्सान के नाक़िस इलम से समान नहीं हो सकता बल्कि ज़रूर है कि जो कलाम उस कामिल और बेमिसल इलम से निकला है वह भी कामिल और बेमिसल ही हो और इन्सानी कलामों से पूर्णतःइमतेयाज़ रखता हो। अतः यही कमालियत कुरान-ए-शरीफ़ में है।" (बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 216 से 240)

अतः हर लिहाज़ से कामिल होने का क़ुरआन-ए-करीम का दावा है और कोई नहीं जो उस के मुक़ाबले पर आ सके और न अब तक आया और न आ सकेगा।

फ़रमाते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम ही मरातिब-ए-इल्मिया के साथ मरातिब-ए--अम्लीया के कमाल तक पहुँचाता है, इल्मी और अम्ली दोनों बातों में कमाल तक पहुँचाता है। फ़रमाया "क़ुरआन शरीफ़ जैसे मुरातिब इल्मिया में आला दर्जा कमाल तक पहुँचाता है वैसा ही मरातिब-ए-अम्लीया के कमालात भी इसी के ज़रीया से मिलते हैं और आसार-ओ-अनवार क़बूलीयत हज़रत अहदीयत उन्हीं लोगों में ज़ाहिर होते रहे हैं और अब भी ज़ाहिर होते हैं जिन्हों ने इस पाक कलाम की मुता-बअत इख़तेयार की है। दूसरों में हरगिज़ ज़ाहिर नहीं होते। अतः तालिब-ए-हक़ के लिए यही दलील जिसको वह बचशम-ए-ख़ुद देख सकता है काफ़ी है यानी यह कि आसमानी बरकतें और रब्बानी निशान सिर्फ क़ुरआन शरीफ़ के कामिल ताबईन में पाए जाते हैं" (बराहीन अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 351-352 बक़ीया हाशिया नंबर : 11) क़ुरआन-ए-करीम की कामिल इत्तबा करोगे तो निशानात भी नज़र आएँगे। लोग निशानात का पूछते हैं कि हमें तो नज़र नहीं आया या इतनी देर दुआ की थी दुआ क़बूल नहीं हुई। इस के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मेरी बात भी तो सुनो, मेरे पर ईमान भी तो मुकम्मल करो। मेरी बातों पर अमल भी तो करो। जब ये होगा तो फिर दुआएं भी अल्लाह तआला सुनता है। अतः यह भी क़ुरआनी तालीम का ख़ास्सा है कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर कामिल अमल करने वाले ही ग़ैरमामूली बरकात हासिल करने वाले हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम ने कमाल-ए-ईजाज़ से समस्त दीनी सदाक़तों पर अहाता है।

ईजाज़ चमत्कार नहीं ईजाज़ अलिफ़। य। जीम के साथ है अर्थ यह है कि संक्षि-प्त मज़मून।

इस को वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाते हैं कि "फ़ुर्क़ान-ए-मजीद ने अपनी फ़साहत और बलाग़त को सदाक़त और हिक्मत और वास्तविक ज़रूरत के इल्तेज़ाम से अदा किया है और कमाल-ए-ईजाज़ से समस्त दीनी सदाक़तों पर अहाता कर के दिखाया है। इस लिए इस में प्रत्येक मुख़ालिफ़ और मुनकिर के साकित करने के लिए बराहीन सातेआ भरी पड़ी हैं और मोमेनीन की तकमील-ए-यक़ीन के लिए हज़ारहा दक़ायक़ हक़ायक़ का एक दरयाए अमीक़-ओ-शफ़्फ़ाफ़ इस में बहता हुआ नज़र आ रहा है। जिन उमूर में फ़साद देखा है उन्हें की इस्लाह के लिए ज़ोर मारा है। जिस शिद्दत से किसी इफ़रात या तफ़रीत का ग़लबा पाया है उसी शिद्दत से इसकी मुदाफ़ेत भी की है। जिन प्रकारों की बीमारीयां फैली हुई देखी हैं इन सब का ईलाज लिखा है। मज़ाहिब-ए-बातेला के प्रत्येक वहम को मिटाया है।' झूठे मज़हब जो सवाल उठाते हैं उनके जो वहम थे उनको मिटाया, ग़लत बातों को मिटाया।" प्रत्येक एतराज़ का जवाब दिया है। कोई सदाक़त नहीं जिसको वर्णन नहीं किया। कोई फ़िर्क़ा ज़ाला (ضالّہ) नहीं जिसका रद्द नहीं लिखा।" गुमराह लोग जो हैं उनके रद्द में बातें लिखें, बड़ा वाज़ेह तौर पर हर हुक्म है" और फिर कमाल यह कि कोई कलिमा नहीं कि बिना ज़रूरत लिखा हो।" बग़ैर ज़रूरत के कोई बात नहीं"और कोई बात नहीं कि बे मौक़ा वर्णन की हो और कोई लफ़्ज़ नहीं कि लग़ू तौर पर तहरीर पाया हो फिर निश्चित प्रतिबद्धता इन सब उमूर के फ़साहत का वह मर्तबा कामिल दिखलाया जिससे ज़्यादा-तर मुतसव्वर नहीं"हो सकता। सारी बातें (cover) कर लीं और मुख़्तसर तौर पर कीं लेकिन फ़साहत-ओ-बलाग़त इस से ज़्यादा हो ही नहीं सकती" और बलाग़त को इस कमाल तक पहुंचाया कि कमाल हसन तर्तीब और ठोस और अकाट्य तर्कों के वर्णन से इलम अव्वलीन और आख़रीन एक छोटी सी किताब में भर दिया।" पहलों के लिए भी इलम था। पहले भी मिसाल दे चुका हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अरब के जो बद्दू थे जो गांव के रहने वाले थे उनको भी क़ुरआन-ए-करीम समझ आ गया और वे बाख़ुदा इन्सान बन गए, तालीम याफ़ता इन्सान बन गए, और जो इलम रखने वाले थे, उनको अपनी अक़ल के मुताबिक़ समझ आया और फिर उन तक नहीं अव्वलीन और आख़रीन तक भी समझ आ गया। आख़रीन में भी क़ुरआन-ए-करीम की तालीम ऐसी है जिसकी तफ़ासीर के हर लफ़्ज़ से हर ज़माने में एक नए मअनी निकलते चले जाते हैं जो इस ज़माने के लिहाज़ से हमें पता देते रहते हैं। फ़रमाया कि एक छोटी सी किताब में भर दिया" ताकि इन्सान जिसकी उम्र थोड़ी और काम बहुत हैं बेशुमार दर्द सिर से छूट जाए और ता इस्लाम को इस बलाग़त से इशाअत मसायल में मदद पहुंचे और हिफ़्ज़ करना और याद रखना हो।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 451-456 हाशिया दर हाशिया नंबर : 3)

क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ भी लोग कर लेते हैं, बच्चे छोटी उम्र में कर लेते हैं। आप ने अपनी किताब बराहीन-ए-अहमदिया में ये साबित फ़रमाया है कि क़ुरआन-ए--करीम ही है जो अपनी इबारत के लिहाज़ से और ज़बान के लिहाज़ से ऐसी सदाक़तें वर्णन फ़रमाता है जो कहीं और नहीं हैं और इंजील इत्यादि किताबें तो इन्सानी दख़ल अंदाज़ी की वजह से इलाही किताबें अब रही नहीं।

फिर क़ुरआन-ए-करीम के ईजाज़ कलाम का कमाल एक जगह और वर्णन फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं : "जब मुंसिफ़ आदमी क़ुरआन शरीफ़ को देखे तो फ़ील-फ़ौर उसे मालूम होगा कि क़ुरआन शरीफ़ में ईजाज़-ए-कलाम और قَلَّ وَدَلَ वर्णन में जो लाज़िमा ज़रुरीया बलाग़त है वह कमाल दिखलाया है।" यानी थोड़े मुख़्तसर अलफ़ाज़ में और वाज़िह वर्णन में कमाल तक पहुंच गया है" वह कमाल दिखलाया है कि वह बावजूद अहाता जमी ज़रूरियात-ए-दीन और इस्तीफा-ए-तमाम दलायल-ओ--बराहीन के इस क़दर हुजम में क़लील मिक़्दार है कि इन्सान सिर्फ तीन चार पहर के अरसा में इबतेदा से इंतेहा तक मजे के लिए उस को पढ़ सकता है।" इतने मुख़्तसर अलफ़ाज़ हैं कि आराम से इन्सान उस को पढ़ सकता है।" अब देखना चाहिए कि यह बलाग़त क़ुरआनी किस क़दर भारी चमत्कार है कि इलम के एक असीमित समुद्र को तीन चार भागों में लपेट कर दिखला दिया है। और हिक्मत के एक जहान को सिर्फ चंद पृष्ठों में भर दिया है। क्या कभी किसी ने देखा या सुना कि इस क़दर क़लील हजम किताब समस्त ज़माना की सदाक़तों पर मुश्तमिल हो। क्या अक़ल किसी आक़िल की इन्सान के लिए यह मर्तबा आलीया तजवीज़ कर सकती है कि वह थोड़े से लफ़्ज़ों में एक दरिया हिक्मत का भर दे जिस से इल्म-ए-दीन की कोई सदाक़त बाहर न हो।" (बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 526 - 527 हाशिया दर हाशिया नंबर : 3)

आप अलैहिस्सलाम यहां वेद जो हिंदूओं की किताब है इस का मुवाज़ना कर रहे थे और साबित फ़रमाया कि वेद में तो ऐसा वर्णन ही नहीं जो क़ुरआन-ए-करीम में है। और फिर लंबी इबारतें हैं इस की जिन्हें पढ़ना ही मुश्किल है। आप अलैहिस्सलाम ने हर मज़हब को चैलेंज किया था कि आओ मैं ये सब खूबियां तुम्हें क़ुरआन-ए--करीम से दिखाता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलावा इस ज़माने में कोई नहीं जिसने इस तरह दुनिया को चैलेंज किया हो।

फिर भी हम पर इल्ज़ाम कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम क़ुरआन-ए-करीम की तौहीन करने वाले हैं

क़ुरआन-ए-करीम का ज़माना कामिल तालीम का मुक़तज़ा था फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ ने ही कामिल तालीम अता की है और क़ुरआन शरीफ़ काही ऐसा ज़माना था जिसमें कामिल तालीम अता की जाती।" यह कुछ वर्णन पहले भी हो चुका है। "अतः यह दावा कामिल तालीम का जो क़ुरआन शरीफ़ ने किया यह उसी का हक़ था उस के सिवा किसी आसमानी किताब ने ऐसा दावे नहीं किया।"

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 4)

फ़रमाया "हमारे नज़दीक तो मोमिन वही है जो क़ुरआन शरीफ़ की सच्ची पैरवी करे और क़ुरआन शरीफ़ ही को ख़ातमुल कुतुब यक़ीन करे।" मोमिन की यह निशानी है"और इसी शरीयत को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में लाए थे उसी को हमेशा तक रहने वाली माने और इस में एक ज़र्रा भर और एक शोशा भी न बदले और इस की इत्तेबा में फ़ना हो कर अपना आप खो दे और अपने वजूद का हर ज़र्रा इसी राह में लगाए अमलन और इल्मन उस की शरीयत की मुख़ालेफ़त न करे तब पक्का मुस्लमान होता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 267 ऐडीशन 1984 ई.) अब हमें यह जायज़े लेने की ज़रूरत है।

क़ुरआन-ए-करीम के आख़िरी किताब होने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ ऐसे ज़माने में आया था कि जिसमें प्रत्येक तरह की ज़रूरतें थीं जिनका पेश आना मुम्किन है पेश आ गई थीं अर्थात समस्त उमूर अख़लाक़ी और एतेक़ादी और कोली और फ़ेली बिगड़ गए थे और प्रत्येक किस्म का इफ़रात और तफ़रीत और प्रत्येक नौ का फ़साद अपने इंतेहा को पहुंच गया था। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ की तालीम भी इंतेहाई दर्जा पर नाज़िल हुई। अतः इन्ही माअनों से शरीयत फ़िर्क़ानी पूर्ण और मुकम्मल ठहरी और पहली शरीयतें नाक़िस रहीं क्योंकि पहले ज़मानों में वह मफ़ासिद कि जिनकी इस्लाह के लिए इल्हामी किताबें आई वह भी इंतेहाई दर्जा पर नहीं पहुंचे थे और कुरान-ए-शरीफ़ के वक़्त में वे सब अपने इंतेहा को पहुंच गए थे। बहुत से बच्चे या नौजवानी में क़दम रखने वाले लोग सवाल करते रहते हैं उनके लिए जवाब है कि पहले वे बातें इंतेहा को नहीं पहुंची थीं यहां इंतेहा को भी पहुंच गईं। इसलिए तालीम भी इंतेहा को पहुंच गई। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल हुआ और इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम के ज़रीया से इस्लाम की बुनियाद पड़ी। अतः अब क़ुरआन शरीफ़ और दूसरी इल्हामी किताबों में फ़र्क़ यह है कि फ़रमाया पहली किताबें अगर प्रत्येक तरह के ख़लल से महफ़ूज़ भी रहतीं फिर भी वे बाव्जाह नाक़िस होने तालीम के ज़रूर था कि किसी वक़्त कामिल तालीम अर्थात फुर्क़ान मजीद ज़हूर पज़ीर होता। उनके सामने बाअज़ बातें आई ही नहीं थीं तो वह वर्णन किस तरह करते। इसकी तालीम नाक़िस थी इसलिए क़ुरआन-ए-मजीद का ज़हूर होना ज़रूरी था। फ़रमाया परंतु क़ुरआन शरीफ़ के लिए अब यह ज़रूरत पेश नहीं कि इस के बाद कोई और किताब भी आए क्योंकि कमाल के बाद और कोई दर्जा बाक़ी नहीं। हाँ अगर यह फ़र्ज़ किया जाए कि किसी वक़्त उसूल हक़्क़ा क़ुरआन शरीफ़ के वेद और इंजील की तरह मुशरिकाना उसूल बनाए जाऐंगे और तालीम तौहीद में तबदील और तहरीफ़ अमल में आवेगी। क़ुरआन-ए-करीम में कोई तहरीफ़ अमल में आएगी या यदि साथ उसके यह भी फ़र्ज़ किया जाए जो किसी ज़माने में वह करोड़ों मुस्लमान जो तौहीद पर क़ायम हैं वह भी फिर तरीक़-ए-शिर्क और मख़लूक़ परस्ती का इख़तेयार कर लेंगे तो बेशक ऐसी सूरत में दूसरी शरीयत और दूसरे रसूल का आना ज़रूरी होगा। हाँ अगर यह सूरत-ए-हाल पैदा होती है तो हो सकता है बल्कि होगा, ज़रूर होगा परंतु दोनों किस्म के फ़र्ज़ हैं यह फ़र्ज़ की गई बातें हैं और यह है।

(उद्धृत बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 101-102 बक़ीया हाशिया नंबर : 9)

यह हो ही नहीं सकता क्योंकि अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि मैं इस शरीयत को महफ़ूज़ रखूँगा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इसी उद्देश्य के लिए भेजा और यही हमारा काम है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "निजात के वास्ते जैसा कि अल्लाह तआला ने बार-बार फ़रमाया है वही ज़रूरी है और वह यह है कि अव्वल सच्चे दिल से अल्लाह तआला को वाहदा लाशरीक समझे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी यक़ीन करे और क़ुरआन शरीफ़ को किताबुल्लाह समझे कि वह ऐसी किताब है कि क़ियामत तक अब और कोई किताब या शरीयत न आएगी यानी कुरान-ए-शरीफ़ के बाद अब किसी किताब या शरीयत की ज़रूरत नहीं है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 236 ऐडीशन 1984 ई.

क़ुरआनी वह्यी की शान के मुताल्लिक़ आप अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि " ख़ुदा की लानत उन पर जो दावा करें कि वे क़ुर्आन का सदृशय ला सकते हैं। पवित्र क़ुर्आन चमत्कार है जिसका सदृश कोई इन्सान और जिन्न नहीं ला सकता और इसमें वे अध्यात्म ज्ञान और खूबियाँ जमा हैं जिन्हें इंसानी ज्ञान जमा नहीं कर सकता बल्कि वह ऐसी वह्यी है कि उसका सदृशय और कोई भी वह्यी नहीं। यद्यपि रहमान (ख़ुदा) की ओर से उसके और कोई वह्यी भी हो। इसलिए कि वह्यी पहुँचाने में ख़ुदा की चमकारें भी हैं और यह निश्चित बात है कि ख़ुदा तआला की चमकार जैसी कि ख़ातमुल अंबिया पर हुई ऐसी किसी पर न पहले हुई और न कभी बाद में होगी और जो शान क़ुर्आन की वह्यी की है वह वलियों की वह्यी की शान नहीं। यद्धपि क़ुर्आन के वाक्यों के समान कोई कलिमा: उन्हें वह्यी किया जाए। इसलिए कि क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञानों का दायरा सब दायरों से बड़ा है और उसमें केवल ज्ञान और हर प्रकार की विचित्र और गुप्त बातें जमा हैं और उसकी बारीक बातें बड़ी उत्तम श्रेणी के गहरे मुक़ाम तक पहुँची हुई हैं और वह बयान तथा तर्कों में सब से बढ़ कर और उसमें में सबसे अधिक इरफ़ान है और वह ख़ुदा का चमत्कारिक कलाम है जिसका सदृश कानों में नहीं सुना और उसकी शान को जिन्नों और इन्सानों का कलाम नहीं पहुँच सकता। अत: क़ुर्आन और इसके कलाम का उदाहरण उस स्वप्न का है जिसे एक न्यायवान बुलंद हिम्मत और पूर्ण बुद्धिमान बादशाह ने और वही स्वप्न देखा एक अन्य साधारण मंद बुद्धि ने, कम हिम्मत व्यक्ति ने। तो इसमें संदेह नहीं कि बादशाह का स्वप्न और सामान्य व्यक्ति का स्वप्न यद्यपि ज़ाहिर में एक ही है परन्तु बुद्धिमान और स्वप्न फल जानने वाले के निकट एक नहीं अपितु न्यायवान बादशाह की ताबीर बहुत बुलंद, सामान्य और लाभ पहुँचाने तथा सब लोगों के पक्ष में खैर-व-बरकत और बहुत ही दुरुस्त और साफ़ है परन्तु साधारण मनुष्य का स्वप्न अधिकतर सूरतों में लिखने और मैल कुचैल से पवित्र नहीं होता। इसके अतिरिक्त उसका प्रभाव बेटों और बापों और थोड़े से दोस्तों से आगे नहीं जाता और यदि इस पर सवार भी हों तो भी बहुत ही निकट स्थान में डेरे डाल देते हैं। और पालनों से उतर कर आशियानों में घुस जाते हैं परन्तु पवित्र क़ुर्आन के सवारों क़ा यह हाल है कि वह आबादी के हर दायरे को ठीक करते हैं और किसी भी शक्ति का परिंदा उससे ऊपर नहीं उड़ सकता और हर पूंजी वाला उसी के ख़ज़ानों और दफ़ीनों से कुछ लेता है और मेरे नज़दीक हर बोलने वाला इस क़र्ज़े में ग्रस्त होने के बिना केवल खाली हाथ है और कर्ज़दार से सख्त मांग की जाती है और सख्त कोशिशें की जाती है कि क़ाज़ी (जज) तक पहुंचा कर उससे रुपया प्राप्त किया जाये परन्तु पवित्र क़ुर्आन दरिद्रों को दान देता और समस्त तंगियाँ दूर करता अपितु निष्कपटता वालों को सोने की डलियाँ देता है और अपने क़र्ज़दारों को मुहलत देने का उपकार नहीं जताता अपितु उनको सोना एकत्रित' करने की प्रेरणा देता है।

दूसरे लोग तो अगर कोई चीज़ दे दें तो अपने क़र्ज़दारों से मुक़द्दमे बाज़ियां करते हैं लेकिन क़ुरआन-ए-करीम तो ऐसा इल्म देता है जो उस के इलम-ओ-इर्फ़ान के चश्मे बटहते चले जाते हैं। यह इस तरह ही है जिस तरह सोने की डलियां मिल रही हैं" और अपने क़र्ज़दारों को मोहलत देने का एहसान नहीं जताता बल्कि उनको सोना इकट्ठा करने की तरग़ीब देता है।" फ़रमाया".. हम तो अव्वल कटोरे बने फिर क़ुरआन के दरिया से लबालब हुए।" (अल्हुदा, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 275 से 278) मेरा हाल पूछते हो तो मैं तो पहले एक पियाला बुना, मिट्टी का कटोरा बना और फिर जो क़ुरआन-ए-करीम का दरिया है इस के पानी से मैंने अपने आपको भरा। अरबी इबारत में क्योंकि यह इस तरह है इसलिए उस का अपना एक अंदाज़ है। अनुवाद भी इसी तरह है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मेरे नज़दीक ख़ुदा की लानत उस पर जो क़ुरआन के एजाज़ का इन्कार करता और अपने कलाम और निज़ाम को बजा-ए--ख़ुद कोई मुस्तक़िल वस्तु समझता है और ख़ुदा की क़सम! हम तो उसी चशमा से पीते और उस की ज़ीनत से आरास्ता होते हैं इसी सबब से तो हमारे कलाम में नूर और सफ़ा होती और हमारे बोलने में रोशनी और शिफ़ा और ताज़गी और ख़ूबसूरती चमकती है और मुझ पर क़ुरआन के सिवा और किसी का एहसान नहीं और उसने मेरी ऐसी परवरिश की है कि वैसी माँ बाप भी तो नहीं करते और ख़ुदा ने मुझे इस से ख़ुशगवार पानी पिलाया और हमने उसको रोशन करने वाला और मददगार पाया।"

(अल्हुदा, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 279)

फ़रमाया कि "अगर मेरे साथ ख़ुदा तआला का कोई निशान न होता और न उस की ताईद और नुसरत मेरे शामिल-ए-हाल होती और मैं ने क़ुरआन से अलग कोई राह निकाली होती या क़ुरआनी अहकाम और शरीयत में कुछ दख़्ल परिवर्तन किया होता या मंसूख़ किया होता या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के बाहर कोई और नई राह बताई होती तो जबकि हक़ था और लोगों का उज़्र माक़ूल और काबिले क़बूल होता कि वास्तव में यह शख़्स ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल का दुश्मन और क़ुरआन शरीफ़ और तालीम क़ुरआन का मुनकिर और मंसूख़ है।" अगर कोई ऐसी बात होती जो मैंने क़ुरआन और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्शादात से बाहर की है तो यक़ीनन तुम्हारा हक़ है कि ज़रूर यह बात कहते कि मंसूख़ करने वाला है, फ़ासिक़ है, यह भी बेशक कह देते तुम लोग मुझे कि "फ़ासिक़ है, फ़ाजिर है, मुर्तद है। मगर जब मैंने न क़ुरआन में कोई तग़य्युर किया और पहली शरीयत का जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए थे एक शोशा और नुक़्ता मैंने बदला बल्कि में क़ुरआन और अहकाम क़ुरआनी की ख़िदमत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पाक मज़हब की ख़िदमत के वास्ते कमरबस्ता हूँ और जान तक मैंने अपनी इसी राह में लगादी है। और मेरा यक़ीन-ए-कामिल है कि क़ुरआन के सिवा जो कामिल अकमल और मुकम्मल किताब है और इस की पूरी इताअत और बग़ैर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के निजात मुम्किन ही नहीं और क़ुरआन में कमी बेशी करने वाले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत का जा अपनी गर्दन से उतारने वाले को काफ़िर और मुर्तद यक़ीन करता हूँ" जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से बाहर निकलता है, इत्तेबा से बाहर निकलता है, उनका जूआ अपनी गर्दन से उतारता है तो वह मुर्तद है और काफ़िर है।" तो फिर उस सूरत में और बावजूद मेरी सदाक़त के हज़ारहा निशान ज़ाहिर हो जाने के।" सिर्फ यही बात नहीं है, मेरा दावा ही नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने निशानात भी दिखाए हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी भी मसीह मौऊद के बारे में पूरी हुई। क़ुरआन-ए-करीम की भविष्यवाणियां भी पूरी हुई। ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो अल्लाह तआला ने भविष्यवाणियां फ़रमाईं वे निशानात ज़ाहिर हो जाने के साथ पूरी हुईं और हो रही हैं" कि जो ख़ुदा तआला ने आज तक मेरी ताईद में आसमान और ज़मीन पर ज़ाहिर किए फिर मुझे जो शख़्स काज़िब और मुफ़्तरी और दज्जाल के नाम से पुकारता है या जो मेरी परवाह नहीं करता और मेरी आवाज़ की तरफ़ कान नहीं धरता यक़ीनन जानो कि ख़ुदा तआला बग़ैर पकड़ के उसे हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ेगा।"(मल्फ़ूज़ात 10 पृष्ठ 308-309 ऐडीशन 1984 ई.) कभी न कभी उस का मुवाख़िज़ा ज़रूर होगा। अतः यह दावा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है और इस पर ही हम यक़ीन रखते हैं कि आप अलैहिस्सलाम के ज़रीया ही क़ुरआनी उलूम के मआरिफ़ हम तक पहुंचे हैं और आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की मुकम्मल पैरवी की है और हमें क़ुरआन-ए-करीम का हक़ीक़ी इर्फ़ान अता किया है।

फ़िक्र करनी चाहिए उन लोगों को जो आप पर इल्ज़ाम लगाते हैं या आप की जमाअत पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम क़ुरआन-ए-करीम की तौहीन करने वाले हैं। यह ख़ुदा तआला के फ़िरिस्ता दे की हैं।

ये लोग जो अपनी हिठ धर्मी से बाज़ नहीं आते या नहीं आ रहे ख़ुदा बग़ैर मुवाख़िज़ा के उनको नहीं छोड़ेगा। किस तरह वे पकड़ेगा, किस तरह उसने मुवाख़िज़ा करना है यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

क़ुरआन-ए-करीम के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुख़्तलिफ़ जगहों पर बाअज़ अहकामात से मुताल्लिक़ बातें भी वर्णन फ़रमाई हुई हैं कुछ एक में यहां वर्णन करता हूँ।

क़ुरआन-ए-करीम में इन्साफ़ क़ायम करने की आला तालीम के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं कि "जो कौमें नाहक़ सतावें और दुख देवें और ख़ूँ-रेज़ियाँ करें और तआक़ुब करें और बच्चों और औरतों को क़तल करें जैसा कि मक्का वाले काफ़िरों ने किया था और फिर लड़ाईयों से बाज़ न आवें ऐसे लोगों के साथ मुआमलात में इन्साफ़ के साथ बरताव करना किस क़दर मुश्किल होता है।" इतने ज़ुलम कर रहे हैं लोग फिर भी उनसे इन्साफ़ करने की तालीम है। बड़ा मुश्किल काम है।" मगर क़ुरआनी तालीम ने ऐसे जानी दुश्मनों के हुक़ूक़ को भी ज़ाए नहीं किया और इन्साफ़ और रास्ती के लिए वसीयत की।" (नूरुल -नंबर 2 रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 409) अतः यह वह उसूल है जो मुआशरे के अमन की ज़मानत है। दुनिया के अमन की ज़मानत है। अगर आज दुनियावी जंगों में मुलव्वस ये कौमें उस उसूल को समझ लें तो दुनिया में अमन क़ायम हो सकता है वर्ना जो हालात पैदा हो रहे हैं ये ख़ौफ़नाक तबाही की तरफ़ लेकर जा रहे हैं चाहे वे एक मलिक की कोशिश हो या दूसरे मुल्क की कोशिश हो। एक मुल्क में सरबराह जाएं या दूसरे मुल्क में जाएं। चीन में जाएं या कहीं जाएं अगर इन्साफ़ क़ायम नहीं करेंगे तो तबाही यक़ीनी है।

फिर एक जगह एक और मिसाल में फ़रमाते हैं कि "अगर कोई क़ुरआन के ज़माना पर एक नज़र डाल कर देखे कि दुनिया में ताद्दद-ए-अज़वाज किस इफ़रात तक पहुंच गया था।" शादियां होती थीं। बीवियां कितनी कितनी होती थीं सौ-सौ अस्सी उसी बीवियां लोग रख लेते थे।"और कैसी बे-एतेदालियों से औरतों के साथ बरताव होता था।" कितने ज़ुलम होते थे औरतों पर।" तो उसे इक़रार करना पड़ेगा कि क़ुरआन ने दुनिया पर यह एहसान किया कि इन समस्त बे-एतेदालियों को मौक़ूफ़ कर दिया।"

(आर्या धर्म, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 45)

यह तो अल्लाह तआला का एहसान है, क़ुरआन-ए-करीम की तालीम का एहसान है कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम के ज़रीया से अल्लाह तआला ने सारी ग़लत किस्म की बातों को ख़त्म किया। औरत की कोई इज़्ज़त नहीं थी। शादियों की कोई हद नहीं थी। हुक़ूक़ नहीं थे। यह सारी चीज़ें क़ुरआन-ए-करीम ने दिलवाईं और इस्लाम से पहले उस का तसव्वुर भी नहीं था।

फिर एक जगह फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ सिर्फ़ सुनने की हद तक महिदूद नहीं है क्योंकि इस में इन्सानों के समझाने के लिए बड़े बड़े माक़ूल दलायल हैं और जिस क़दर अक़ायद और उसूल और अहकाम उसने पेश किए हैं उनमें से कोई भी ऐसा अमर नहीं जिसमें ज़बरदस्ती और तहक्कुम हो।" जो भी अहकाम हैं उनमें ज़बरदस्ती कोई नहीं, तहक्कुम कोई नहीं। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "...لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ(अल् बकरः : 257) "अर्थात देन में कोई बात जबर से नहीं मनवाना" अर्थात यह दीन कोई बात जबर से मनवाना नहीं चाहता बल्कि प्रत्येक बात के दलायल पेश करता है।" (इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 433) और दलायल पेश करके फिर सामने रखता है और मानने की तरफ़ तवज्जा दिलाता है।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की कामिल तालीम का ऐलान करते हुए दुनिया को चैलेंज देते हुए, आप फ़रमाते हैं कि "हमारा ख़ुदावंद क्रीम कि जो दिलों के पोशीदा भेदों को ख़ूब जानता है इस बात पर गवाह है कि अगर कोई शख़्स एक ज़र्रा का हज़ारम हिस्सा भी क़ुरआन शरीफ़ की तालीम में कुछ नुक़्स निकाल सके या बमुक़ाबला इस के अपनी किसी किताब की एक ज़र्रा भर कोई ऐसी ख़ूबी साबित कर सके कि जो क़ुरआनी तालीम के बरख़िलाफ़ हो और इस से बेहतर हो तो हम सज़ा-ए-मौत भी क़बूल करने को हैं।" (बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा 3, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 298 बक़ीया हाशिया दर हाशिया नंबर : 2) अतः यह ऐसा बड़ा दावा है जो कामिल ईमान और यक़ीन के बग़ैर किया ही नहीं जा सकता।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अगर कोई शख़्स ख़ुदा तआला पर ईमान रखे और फिर क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर करे कि ख़ुदा तआला ने क्या कुछ क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया है तो वह शख़्स दीवाना-वार दुनिया को छोड़ ख़ुदा तआला का हो जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 28 ऐडीशन 1984 ई.)

अगर ईमान-ए-कामिल हो और फिर क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर करो तो फिर

दुनियादारी के बजाय ख़ुदा तआला की तरफ़ हर वक़त तवज्जा हो अल्लाह तआला हम सबको यह इर्फ़ान भी अता फ़रमाए :

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "आज रूऐ ज़मीन पर सब इल्हामी किताबों में से एक फुर्क़ान मजीद ही है कि जिसका कलाम-ए-इलाही होना अकाट्य दलायल से है।

जिसके उसूल-ए-निजात के बिल्कुल रास्ती और वज़ा फ़ित्रती पर मबनी हैं "निजात के जो उसूल हैं वज़ा फ़ित्रत पर मबनी हैं। "जिसके अक़ायद ऐसे कामिल और मुस्तहकम हैं जो बराहीन को या उनकी सदाक़त पर शाहिद नातिक़ हैं जिसके अहकाम हक़ महज़ पर क़ायम हैं जिसकी तालीमात प्रत्येक तरह की आमेज़िश शिर्क और बिद्दत और मख़लूक़ परस्ती से पूर्णतः पाक हैं जिसमें तौहीद और ताज़ीम-ए--इलाही और कमालात हज़रत-ए-इज़्ज़त के ज़ाहिर करने के लिए इंतेहा का जोश है जिसमें यह ख़ूबी है कि सरासर वहदानीयत जनाब-ए-इलाही से भरा हुआ है। "ख़ुदा तआला की वहदानियत से भरा हुआ है।" और किसी तरह का धब्बा नुक़्सान और ऐब और नालायक़ सिफ़ात का ज़ात-ए-पाक हज़रत बारी तआला पर नहीं लगाता और किसी एतेक़ाद को ज़बरदस्ती तस्लीम कराना नहीं चाहता।" यह नहीं कि एतेक़ाद को ज़बरदस्ती तस्लीम कर लो बल्कि जो तालीम देता है उस की दलील देता है फ़रमाया" बल्कि जो तालीम देता है उसकी सदाक़त की वजूहात पहले दिखला लेता है और प्रत्येक मतलब और मुद्दा को तर्कों और बराहीन से साबित करता है। और प्रत्येक उसूल की हक़्क़ीत पर दलायल वाज़िह वर्णन करके मर्तबा यकीन-ए-कामिल और मार्फत-ए-ताम तक पहुँचाता है। और जो जो ख़राबियां और न पाकियां और ख़लल और फ़साद लोगों के अक़ायद और आमाल और अक़्वाल और अफ़आल में पड़े हुए हैं इन समस्त मफ़ासिद को रोशन बराहीन से दूर करता है और वे समस्त आदाब सिखाता है कि जिन का जानना इन्सान को इन्सान बनने के लिए निहायत ज़रूरी है।" इन्सान बनने के भी तो आदाब होते हैं वे सारे आदाब क़ुरआन-ए-करीम में मिलते हैं " और प्रत्येक फ़साद की इसी ज़ोर से प्रतिरोधक क्षमता करता है कि जिस ज़ोर से वह आजकल फैला हुआ है।" यह नहीं कि एक ज़माने में फ़साद को रद्द कर रहा है बल्कि हर फ़साद की इसी ज़ोर से प्रतिरोधक क्षमता करता है जिस ज़ोर से वह आजकल फैला हुआ है। जिस तरह आज फैला हुआ है इसी तरह उस की मुदाफ़अत भी वहीं से निकल आती है। इस का ईलाज निकलता है इस का तोड़ करता है। और" इस की तालीम निहायत मुस्तक़ीम और क़वी और सलीम है गोया अहकाम क़ुदरती का एक आईना है और कानून-ए-फ़ित्रत की एक अक्सी तस्वीर है और बीनाई और बसीरत-ए-कलबी के लिए एक आफताब-ए-चशम है।" रोशन करने वाला सूरज है।"और अक़ल के इजमाल को तफ़सील देने वाला और इस के नुक़्सान का जबर करने वाला है।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा 2, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 81-82)

जो अक़ल की बातें मुख़्तसर होती हैं उनको तफ़सीली तौर पर वर्णन करता है और नुक़्सान को पूरा करता है।

अल्लाह तआला हमें क़ुरआन-ए-करीम पर हक़ीक़ी तौर पर अमल करने वाला और इस की तालीम के मुताबिक़ अमल करने वाला, उस को समझने वाला और अपनी ज़िंदगीयां उसके मुताबिक़ गुज़ारने वाला बनाए।

रमज़ान के बाद भी इस नेअमत से फ़ैज़ उठाने की इसी तरह कोशिश करते रहें जिस तरह रमज़ान में कर रहे हैं।

रमज़ान में जमाअत के मुख़ालेफ़ीन के उपद्रव से बचने के लिए भी खासतौर पर दुआएं करें अल्लाह तआला हर उपद्रव के हाथ को रोके और उनकी पकड़ के सामान फ़रमाए।

दुनिया को फ़ित्ना-ओ-फ़साद से बचने के लिए भी उमूमी तौर पर बहुत दुआ करें।

इसी तरह फ़लस्तीन में भी आजकल बड़ा फ़साद पैदा हुआ-हुआ है फ़लस्तीन के मुस्लमानों के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला इन्हें ज़ालिमों के ज़ुलम से बचाए और मुस्लिम दुनिया के लीडरों को भी अक़ल दे कि वे अपने मुफ़ादात से बाहर निकल कर मुस्लमानों के उमूमी मुफ़ादात की हिफ़ाज़त करने वाले हों।

अल्लाह तआला इस रमज़ान में हमारे लिए रहमतों और बरकतों के दरवाज़े पहले से बढ़कर खोले।

★ ★ ★

शेष पृष्ठ 11 पर

गया था। हुज़ूर अनवर की आमद से क़ब्ल सफ़र करने वाले समस्त अहबाब का सामान जहाज़ में लोड किया जा चुका था।

इस जहाज़ में सफ़र करने वाले अहबाब की संख्या 69 थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, हज़रत बेगम साहिबा और क़ाफ़िला के मैंबरान के इलावा इस जहाज़ में सफ़र करने वालों में अमीर जमाअत अहमदिया अमरीका साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब, श्रीमती अंतुल मंसूर साहिबा पत्नी अमीर साहिब अमरीका और श्रीमती नक़्क़ाशा अहमद साहिबा, नायब उमरा में से डाक्टर हमीदुर रहमान साहिब, डाक्टर नसीम रहमत साहिब, फ़लाहुद्दीन शमस साहिब, वसीम मलिक साहिब और अज़हर हनीफ़ साहिब नायब अमीर मुबल्लिग़ इंचार्ज शामिल थे।

इसके अतिरिक्त अदील अब्दुल्लाह साहिब सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया अमरीका, नैशनल जनरल सैक्रेटरी मुख़तार साहिब, फ़ैज़ान अब्दुल्लाह साहिब चेयरमैन मैडीकल एसोसीएशन अमरीका, मुनइम नईम साहिब चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़रस्ट अमरीका, शरीफ़ ओदा साहिब अमीर जमाअत कबाबीर और डाक्टर तनवीर अहमद साहिब बतौर डयूटी डाक्टर शामिल थे।

इस के इलावा विभिन्न जमाअतों के सदरान, मुरब्बियान, नैशनल आमिला के विभिन्न सेक्रटरयान और अन्य जमाअती ओहदेदारान भी शामिल थे।

अमरीकन एयर लाईन के Eric Adduchio बतौर को आर्डीनेटर इस सफ़र में शामिल थे।

ख़िलाफ़त फ़्लाईट

जो बोर्डिंग पास मुहय्या किया गया इस पर Khilafat Flight 2022 लिखा हुआ था। फ़्लाईट का नंबर KF-2022 था। बोर्डिंग कार्ड के एक तरफ़ ये शब्दों दर्ज थे।

Ahmadiyya Muslim Community USA (100) 1920 – 2020 Centennial Khilafat Flight 2022 in the company of Hazrat Mirza Masroor Ahmad Khalifatul Masih 5 (aba)

जहाज़ पर सवार होने से क़ब्ल सफ़र करने वाले समस्त अहबाब जहाज़ के सामने खड़े थे। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला तशरीफ़ लाए तो समस्त अहबाब ने अपने प्यारे आक़ा के साथ ग्रुप फ़ोटो खिचवाने की सआदत पाई MTA ने ये समस्त मुनाज़िर फ़िल्माए।

12 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला जहाज़ पर सवार हुए। 12 बजकर 58 मिनट पर जहाज़ शिकागो के इंटरनैशनल O'Hare एयरपोर्ट से डलास के लिए रवाना हुआ और क़रीबन दो घंटे के सफ़र के बाद 2 बजकर 55 मिनट पर डलास के इंटरनैशनल Fort Worth आयर पोर्ट पर उतरा और टैक्सी करता हुआ एक ऐसे Exit Gate पर आकर पार्क हुआ जहां से बाहर जाने का रास्ता इंतिहाई कम था और क़रीब ही गाड़ियां पार्क की गई थीं।

जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए तो सदर जमाअत डलास ख़ालिद रहीम शैख़-साहब, मुबल्लिग़ सिलसिला डलास ज़हीर अहमद बाजवा साहिब और सदर जमाअत फोर्ट विरथ सईद चौधरी साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा।

3 बजकर 10 मिनट पर एयरपोर्ट से डलास जमाअत के मर्कज़ "मस्जिद बैतुल इकराम" के लिए रवानगी हुई। पुलिस की गाड़ियों और असंख्य मोटरसाईकिलों ने क़ाफ़िले को Escort किया और रास्ते को साथ साथ क्लीयर किया। क़रीबन चालीस मिनट के सफ़र के बाद हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला का डलास जमाअत के मर्कज़ में पधारे।

(शेष आगे ..)

रिपोर्ट : श्रीमान अब्दुल मजीद ताहिर साहिब

(ऐडीशनल वकीलुल् तिबशीर् लंदन, यू.के)

(बहवाला अख़बार बदर उर्दू 20, 27-अक्तूबर 2022)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-7)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में अमन क़ायम करने के विषय में क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् हज आयत 40 और 41 मे आलमी मज़हबी आज़ादी क़ायम करने का अज़ीमुश्शान और बुनियादी उसूल वर्णन किया गया है। इन आयात करीमा में अल्लाह फ़रमाता है कि "क़िताल की इजाज़त केवल उन लोगों को दी जाती है जिन के ख़िलाफ़ जंग की गई है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए और निसंदेह अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। वे लोग जिन्हें उनके घरों से व्यर्थ मे निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है।"

फिर फ़रमाता है "और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उनमें से कुछ को कुछ दूसरों से भिड़ा कर न किया जाता तो राहिब ख़ाने मुनहदिम कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के मुआबिद भी और मसाजिद भी जिनमें बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है और निसंदेह अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उसकी मदद करता है। निसंदेह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन दोनों आयात करीमा में जहां अल्लाह तआला ने पैग़ंबर इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिफ़ाई जंग की इजाज़त दी है वहां यह भी वाज़ेह तौर पर निश्चित कर दिया कि यह इजाज़त इसलिए दी गई है कि ज़ुलम करने वाले ने दुनिया से मज़हबी आज़ादी ख़त्म करने की कोशिश की है। जंग की इजाज़त केवल मुस्लमानों और उनकी मसाजिद की हिफ़ाज़त के लिए या दीन को फैलाने के लिए नहीं दी गई बल्कि क़ुरआन-ए-करीम निश्चित तौर पर फ़रमाता है कि अगर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने वालों को ताक़त से रोका नहीं जाता तो कोई गिरजा, राहिब ख़ाना, मंदिर, मस्जिद और कोई माबद महफ़ूज़ नहीं रहता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ही वह वाहिद अल्लाह का कलाम है जो न केवल समस्त मज़ाहिब-ओ-अक़ायद के पैरोकारों को मुकम्मल मज़हबी आज़ादी फ़राहम करता है बल्कि एक क़दम आगे बढ़कर समस्त मुस्लमानों को और समस्त ऐसे लोगों जो कि मस्जिद आते हैं उनको ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त का हुक्म देता है। ये वह अल्लाह का कलाम है जो कि समस्त मज़ाहिब, अदयान और अक़ायद की हिफ़ाज़त और दिफ़ा करता है। यह वह ख़ालिस और प्रत्येक के हुक़ूक़ समोने वाली इस्लामी तालीमात हैं जो हम समस्त दुनिया तक फैलाने की कोशिश कर हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक इस मस्जिद का ताल्लुक़ है तो आप सोचते होंगे कि हमने ज़ायन में मस्जिद निर्माण करने का फ़ैसला क्यों किया? निसंदेह इसका बुनियादी उद्देश्य तो वही है जो मैं वर्णन कर चुका हूँ। दूसरा यह कि जो लोग इस शहर की तारीख़ से वाक़फ़ीयत रखते हैं उनको इलम होगा कि ज़ायन शहर की बुनियाद एक Evangelist ईसाई मिस्टर इलैगज़ेंडर डोई ने रखी, जिसने ख़ुदा की तरफ़ से मामूर होने का दावे किया था। मिस्टर डोई इस्लाम की सख़्त मुख़ालिफ़त और मुस्लमानों से नफ़रत का इज़हार करता था। यह मुख़ालिफ़त जमाअत अहमदिया के इलम में आई और आप अलैहिस्सलाम ने उसको सीधे चैलेंज दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से कुछ ये सवाल उठाएँगे कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने मस्टर्ड डोई को संबोधित करते हुए सख़्त लहजा क्यों अपनाया और यह किस तरह आपकी प्यार-ओ-मुहब्बत की तालीम से समानता है?

दरअसल हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुरअमन तालीमात और डोई को जवाब देने में बाहमी कोई विरोधाभास नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी एक अवसर पर भी फ़साद और कट्टरवाद की शिक्षा की हिदायत नहीं की। वास्तजमाअतमे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्टर्ड डोई की इस्लाम और बानी इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ ईश - निंदा का इलम हुआ तो आप अलैहिस्सलाम ने बाहमी एहतेराम को मलहूज़ रखते हुए उसे दलील से क़ायल करने की कोशिश की कि वे तहम्मुल का मुज़ाहरा करे और मुस्लमानों के जज़बात का ख़्याल करे। इस के बरख़िलाफ़ मस्टर्ड डोई इस्लाम के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और खुल कर इस्लाम के नाबूद करने की ख़ाहिश की। उदाहरणतः लिखता है कि "मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए इस्लाम दुनिया से नाबूद हो जाए। हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर। हे ख़ुदा! इस्लाम को हलाक कर दे।"

फिर अपनी तहरीरात मैं मिस्टर डोई ने बड़े घमंड में इस को ईसाईयत और इस्लाम के मध्य अज़ीम जंग क़रार दिया। उसने लिखा कि अगर मुस्लमान ईसाईयत क़बूल न करें तो वह हलाकत-ओ-तबाही में मुबतला होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उन इंतिहाई बयानात और ईश - निंदा के जवाब में जमाअत अहमदिया के संस्थापक अलैहिस्सलाम ने इस बात को निश्चित बनाया कि हज़ारों बल्कि लाखों मासूम लोगों इस तकलीफ़ से बच जाएं जिस में वे मिस्टर डोई की ईसाइयों और मुस्लमानों के मध्य मज़हबी जंगों की ख़ाहिश पूरी होने के नतीजा में पड़ सकते थे। इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने मिस्टर डोई को मुबाहला का चैलेंज दिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुस्लमानों की हलाकत और तबाही की दुआ करने की बजाय मिस्टर डोई यह दुआ करें कि हम दोनों में से जो झूठा है वह दूसरे की ज़िंदगी में मर जाए। यह दरअसल एक हमदर्दाना फ़ेअल और हालात को बेहतर करने का माध्यम था। बजाय ईस के कि समस्त मुस्लमानों और ईसाइयों को एक दूसरे के मुक़ाबिल पर खड़ा कर दिया जाए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि आप और मिस्टर डोई दुआ का सहारा लें और मामला अल्लाह तआला के हाथ में दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह सच्चाई जानने का एक मुनासिब और पुरअमन माध्यम था। अगर यह कहा जाए कि यह अदावत और इश्तिआल अंगेज़ी के मुक़ाबला पर सब्र का कामिल उदाहरण था तो इस में कोई मुबालग़ा नहीं होगा। इस चैलेंज के बाद मिस्टर डोई ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ इंतेहाई नाज़ेबा तरीक़ इख़तेयार किया। इसलिए रिपोर्ट हुआ है कि मिस्टर डोई ने कहा कि "हिन्दुस्तान में एक मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है .. तुम ख़्याल करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खीयों का जवाब दूँगा अगर में उन पर अपना पांजमाअतरखूँ तो मैं उनको कुचल कर मार डालूँगा।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर अपना चैलेंज दोहराया और अमरीका और अन्य इलाक़ों में इस की ख़ूब तशहीर हुई। सहाफ़ी हज़रात मिस्टर डोई की ताक़त और आला मुक़ाम को वर्णन करते और इस का मुवाज़ना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इस तरह करते हैं कि इंडिया के एक दौर उफ़्तादा गांजमाअतसे ताल्लुक़ रखने वाला शख़्स जिसकी दौलत और दुनियावी रसूख़ का

मिस्टर डोई से कोई मुक़ाबला ही नहीं। फिर जस्मानी तौर पर भी मिस्टर डोई हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उम्र में छोटा और सेहत में बेहतर था। इस समस्त ज़ाहिरी फ़र्क़ के बावजूद हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपना चैलेंज वापस लेने का नहीं सोचा और इस हवाला से ज़रा भी हिचकिचाहट का इज़हार नहीं किया और समस्त दुनिया वह बेसरो सामानी के बावजूद जल्द ही नतायज आप अलैहिस्सलाम के हक़ में पलट गए। पै दर पै ऐसे वाक़ियात हुए कि डोई की हिमायत जाती रही और उस की दौलत, जस्मानी और ज़हनी सलाहीयतें ख़त्म हो गईं। अंततः वह अपने अंजाम को पहुंचा। जिसको यू ऐस मीडीया ने अफ़सोसनाक अंजाम क़रार दिया। निसंदेह उस वक़्त का यू ऐस मीडीया ख़राज-ए-तहिसीन के लायक़ है जिसने ईमानदारी से इस की रिपोर्टिंग की। उदाहरणतः एक मशहूर Boston Herald अख़बार ने यह शीर्षक दिया कि "Great is Mirza Ghulam Ahmad – the Messiah"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : संक्षिप्त यह कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपने ख़्यालात और इक़तेदार को किसी पर नाफ़िज़ करने की कोशिश नहीं की, न ही मिस्टर डोई या किसी भी मुख़ालिफ़ इस्लाम की नफ़रत को ताक़त के साथ या ज़बरदस्ती रोकने का सोचा। अहमदी मुस्लमानों के लिए बानी जमाअत की सदाक़त का एक निशान है, इस तनाज़ुर में ज़ायन का शहर हमारी तारीख़ में एक विशेष महत्तजमाअतरखता है। वक़्त की कमी के बायस मैं मज़ीद तफ़सील में नहीं जा सकता। जबकि मस्जिद में इस मुबाहला के हवाला से ख़ुसूसी नुमाइश का एहतेमाम किया गया है, अगर आप इस हवाले से मज़ीद जानना चाहते हैं तो आप जाने से क़बल इस नुमाइश से इस्तिफ़ादा कर सकते हैं। या मुम्किन है कि आप पहले ही नुमाइश देख चुके हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अतः में यह कहना चाहता हूँ कि आज हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद के पैरोकार अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि हम मस्जिद फ़तह अज़ीम का हक़ीक़ी मज़हबी आज़ादी के निशान के तौर पर उद्घाटन कर रहे हैं। इस के दरवाज़े इस सुनहरे पैग़ाम के साथ खोले जा रहे हैं कि समस्त लोगों और कम्यूनिटीज़ के मज़हबी हुक़ूक़ और पुरअमन अक़ायद का हमेशा ख़्याल रखा जाएगा और उनका तहफ़्फ़ुज़ किया जाएगा। यह जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का अव्वलीन उद्देश्य है कि बनीनौ इन्सान को रुहानी निजात की राह पर चलाया जाए और इस बात को निश्चित बनाया जाए कि समस्त लोगों रंग-ओ-नसल की तफ़रीक़ से क़त-ए-नज़र बाहमी प्यार और हम-आहंगी और हक़ीक़ी अमन और तहफ़्फ़ुज़ रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरी दिली-ख़्वाहिश है और मैं दुआ करता हूँ कि यह मस्जिद इन शा अल्लाह अमन, तहम्मुल और समस्त बनीनौ इन्सान से मुहब्बत का स्रोत होगी। मेरी दुआ है कि यहां इबादत करने वाले समस्त आजिज़ी के साथ अपने ख़ालिक़ को पहचानें, उसी के आगे झुकें और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करें। हमारा यक़ीन है कि हम इसी सूरत मे कामयाब-ओ-कामरान हो सकते हैं कि जब हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करने वाले होंगे। इन शब्दों के साथ मैं आप सब का एक मर्तबा फिर शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप आज शाम इस प्रोग्राम में शामिल हुए हैं। अल्लाह तआला आप सब पर अपना फ़ज़ल फ़रमाए। आमीन

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने मेयर का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने शहर की चाबी पेश की। तथा फ़रमाया मुझे यक़ीन है कि अब यह चाबी महफ़ूज़ हाथों में है।

हुज़ूर अनवर का यह ख़िताब 7 बजकर 23 मिनट तक जारी रहा आख़िर पर हुज़ूर ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के इख़तेताम पर मेहमानों ने देर तक तालियाँ बजाईं। इसके बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद भी कुछ मेहमानों के साथ हुज़ूर अनवर ने गुफ़्तगु फ़रमाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर महिलाओं की मारकी मे तशरीफ़ ले गए जहां महिलाएं मौजूद थीं 8 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

यक्म अक्तूबर 2022 ई. (शनिवार का दिन) शेष भाग

मेहमानों के तास्सुरात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने मेहमानों पर गहिरा असर छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने अपने तास्सुरात का इज़हार किया :

★ Illinois के कांग्रेस मैन राजा कृष्णा मूर्ती साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा "क्या ही ख़ूबसूरत दिन है और क्या ही ख़ूबसूरत प्रोग्राम है। हुज़ूर ने अपनी आमद से हमें शरफ़ बख़्शा। मस्जिद फ़तह अज़ीम लोगों के जमा होने के लिए, इबादत करने के लिए बाहमी ताल्लुक़ात बढ़ाने के लिए और इस्लाम के बारे में आगाही हासिल करने के लिए बहुत ही उम्दा होगी।

★ एक और मेहमान Cheri Neal साहिब जो कि ज़ायन टाउन शिप की सुपरवाइज़र हैं वर्णन करती हैं कि मैं समस्त इंतेज़ामत से बहुत हैरान हूँ। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप अपने इस उद्देश्य में कामयाब हुए हैं जिस के लिए एक अरसा मेहनत की है। मैं यहां आकर बहुत ख़ुश हूँ।

★ John D Eidelberg लेक काओनटी के शेरिफ वर्णन करते हैं कि यहां आकर हुज़ूर को देखना, उनसे मिलना, उनसे बात करना और विभिन्न रहनुमाओं को सुनना मेरे लिए ख़ुशी का बायस है। यहां आना मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र है। मैं आपका मशकूर हूँ कि आपने मुझे अपनी जमाअत के साथ ख़ूबसूरत लमहात गुज़ारने का अवसर दिया। हुज़ूर ने बाहमी ताल्लुक़ात और आपस में काम करने के बारे में बात की मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपकी तक़रीर सुनना मेरे लिए काबिल फ़ख़र था। आपकी तक़रीर ख़्यालात को रोशन करने वाली थी।

★ एक और मेहमान Craig Constantine साहिब जो कि राईस यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं वर्णन करते हैं कि आपका पैग़ाम "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं" बाहमी एहतेराम, तहम्मुल, इज़्ज़त नफ़स का ख़्याल रखना, ये सब बुनियादी चीज़ें हैं और हमारे दिल से आती हैं और इस से दिल-ओ-दिमाग़ की रुहानी बेदारी होती है।

★ ज़ायन के साबिक़ा कमिशनर Amos Monk साहिब वर्णन करते हैं कि मेरे ख़्याल में आपकी तालीमात प्रत्येक चीज़ का अहाता किए हुए हैं और दुनिया को इस से ज़्यादा आगाही होनी चाहिए। मेरे ख़्याल में यह आजकल की दुनिया का ख़ूबसूरत तरीन राज़ है। मैं अपने सामने मेज़ पर पड़े हुए ब्रोशर देख सकता हूँ जिस पर अदल-ओ-इन्साफ़, ख़ुलूस और मुहब्बत का पैग़ाम है। यही तो वह चीज़ें हैं जिसकी दुनिया को ज़रूरत है। नफ़रत ख़त्म कर दें तो दुनिया जन्नत नज़ीर हो जाएगी। मेरे ख़्याल में यह पैग़ाम समस्त दुनिया को सुनना चाहिए। दुनिया के मसायल का यही है।

★ ज़ाईन शहर के मेयर Billy Mckinney साहिब जिन्हों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में ज़ायन शहर की चाबी पेश की अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं कि मैं यहां 1962 ई. से मुक़ीम हूँ। जैसा कि आप सब जानते हैं कि यह प्रोग्राम ज़ायन शहर और जमाअत अहमदिया के लिए एक तारीख़ी प्रोग्राम है। हुज़ूर से मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। पहली मर्तबा ऐसा हुआ है कि किसी से मिलकर मुझे चुप लग गई हो। मुझे समझ नहीं आरही थी कि क्या कहूं। आपकी मौजूदगी का एहसास बहुत उम्दा है। जमाअत अहमदिया ने इस कम्यूनिटी में बहुत ख़िदमात सरअंजाम दी हैं। आइन्दा भी हम उम्मीद करते हैं। बाहमी ताल्लुक़ात को बढ़ाते हुए मिलकर काम करते रहेंगे। शहर के ठीक बीच में मस्जिद का होना भी एक उम्दा एहसास है।

★ Rabi Melinda Solma साहिब जो कि न्यूयार्क के Tanenbaum Center of Inter-Religious Understanding से ताल्लुक़ रखते हैं वर्णन करते हैं कि जमाअत अहमदिया से हमेशा की तरह बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। आपके ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत उम्दा और सबको साथ लेकर चलने वाला है। इन तालीमात का अमली नमूना दिखाना, सब के लिए दरवाज़े खुले रखना, अमन के क़ियाम के लिए काम करना, प्रत्येक का बतौर इन्सान सम्मान करना यह बहुत ही आला तालीम है।

★ लोकल आरकेटेकट Kelvin Cox साहिब जिन्हों ने मस्जिद का नक़्शा, डिज़ाइन और तामीर में काम किया है कहते हैं यह बहुत ही उम्दा इमारत है और यहां पर हुज़ूर की मौजूदगी, यह एहसास में शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। हुज़ूर ने जो

ख़ुदा तआला का पैग़ाम दिया कि दुनिया और सयासी उमूर से कोई ताल्लुक़ नहीं, केवल अमन और प्यार का पैग़ाम पहुंचाना है, यह बहुत उम्दा पैग़ाम था और यही है जिसकी दुनिया को आज ज़रूरत है।

★ इस प्रोग्राम में एक मेहमान ऐसे भी शामिल थे जिन्हों ने ज़ायन मस्जिद की संग-ए-बुनियाद के अवसर पर एक ईंट रखने की सआदत पाई थी उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा कि आज एक ख़ूबसूरत दिन था। मैं सुबह बेदार हुआ जैसे कि आज का दिन बहुत विशेष है। मुझे पिछले वर्ष इस मस्जिद की संग-ए-बुनियाद रखने की तौफ़ीक़ मिली। मैं बहुत ख़ुश था कि कब उसे मुकम्मल होता देखूँगा और हुज़ूर से मिल सकूँगा। हम बहु

★ ज़ायन की पुलिस के चीफ़ Eric Brichbarden साहिब वर्णन करते हैं कि यह एक बहुत अच्छा प्रोग्राम था। सब लोगों की तरफ़ से मुहब्बत और ख़ुलूस देख कर बहुत अच्छा लगा। यह पैग़ाम कि इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप कौन हो, अहमियत बात की है कि एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हो, क्या ही उम्दा और ख़ूबसूरत पैग़ाम है। बहुत ही अच्छा प्रोग्राम रहा।

एक मेहमान Jennifer Smith साहिब वर्णन करते हैं कि अगर आपकी जमाअत के उसूलों की बात की जाए तो वे सबसे आला हैं। जब आप ज़ायन शहर में क़दम रखते हैं तो पुरानी इमारत पर एक मोटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" का पैग़ाम दिखाई देता है और इस की गूंज आपके साथ रहती है। यह आवाज़ आपके साथ रहती है और यही ज़ायन शहर की असल रूह है।

★ एक मेहमान ने वर्णन किया कि यह जान कर बहुत अच्छा लगा कि हमारे दरमयान आप जैसे रहनुमा मौजूद हैं जो कि लाखों लोगों की नुमाइंदगी करते हैं और लोगों को आपस में जोड़ते हैं। इस विषय पर बात करते हैं कि हम सब एक हैं और प्रत्येक मज़हब का महत्त्व है। यह पैग़ाम बहुत अच्छा और प्रभावी था।

★ एक लोकल हाई स्कूल के प्रिंसिपल Zach Livingston साहिब वर्णन करते हैं कि ज़ायन एक छोटी कम्यूनिटी है और ऐसे प्रोग्राम और लोगों को क़रीब लाने के ऐसे मवाक़े बहुत अच्छे होते हैं। मस्जिद का उद्घाटन बहुत अच्छा क़दम है और हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है।

★ राईस यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर Craig Considine साहिब ने मुबाहला के बारे में हैरानगी का इज़हार करते हुए कहा कि ज़्यादा लोगों को इस के बारे में मालूम होना चाहिए। कहते हैं कि मुझे हुज़ूर की मौजूदगी में सुकून और इतमेनान हासिल हुआ और यह कि हुज़ूर का पैग़ाम सबको सुनना चाहिए।

★ शिकागो से मेहमानों के एक गिरोह ने तक़रीब के नाक़ाबिल-ए-यक़ीन इंतेज़ाम और ख़िदमत गुज़ारूँ के आदाब को महसूस किया उन्होंने यह भी वर्णन किया कि जब भी वह हमारी किसी तक़रीब में शामिल हुए मुहब्बत और अमन का पैग़ाम प्रत्येक चीज़ की बुनियाद रहा। उन्होंने हुज़ूर के साथ तस्वीर भी ली और कहा कि यह उनकी ज़िंदगी का अहम तरीन अवसर था।

★ मेहमानों ने मजमूई तौर पर इंतेज़ामीया के बारे में मुसबत ख़्यालात का इज़हार किया। बार-बार लोगों को चैक करना, हिफ़ाज़ती उमूर की तलक़ीन करना, किसी ने भी अपना आई डी कार्ड दिखाने या कोविड कार्ड दिखाने से इंकार नहीं किया और न ही जब उन्हें टैस्ट करवाने का कहा गया तो उन्होंने इंकार किया।

★ एक मेहमान ख़ातून Lesley साहिबा वर्णन करती हैं कि अव्वल तो यहां पर मेरा होना एक एज़ाज़ की बात है। मैंने जो कुछ यहां से सीखा और यहां की ख़ूबसूरती और अमन से बहुत मुतास्सिर हूँ। मेरे पास वे शब्दों नहीं हैं जिनसे वर्णन कर सकूँ कि आज का दिन मेरे लिए कितना बा-मानी था।

★ एक मेहमान Rabbi Melinda Zelma साहिब वर्णन करते हैं कि मैं इस तक़रीब से बहुत मुतास्सिर हूँ। विशेषता यहां काम करने वालों से रॉबी मालेंडा ने हुज़ूर के साथ मुलाक़ात, हुज़ूर से सवाल-ओ-जवाब और जलसा सालाना में शिरकत की ख़ाहिश पर शुक्रगुज़ारी का इज़हार किया।

★ एक ख़ातून मेहमान Gloria साहिबा वर्णन करती हैं कि ज़ायन की तारीख़ बहुत मालूमाती थी। जबकि में यहां रहती हूँ लेकिन इस जगह के बारे में काफ़ी चीज़ें ऐसी थीं जो मैं नहीं जानती थी।

★ एक मेहमान ने कहा कि मैंने इस तक़रीब से भरपूर लुतफ़ उठाया और इस पैग़ाम ने मुझे बहुत मुतास्सिर किया। मैं आपके मोटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" जानता था लेकिन आपको देख कर इस पर मज़ीद यक़ीन बढ़ा। सब कुछ बहुत बेहतरीन था। काश सब लोग इस मुहब्बत के पैग़ाम को समझ सकें जो आप लोग फैला रहे हैं। मुझे बहुत सारी चीज़ों ने प्रभावित किया। जब हुज़ूर ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-मजीद ही एक वह किताब है जो समस्त मज़ाहिब की हिफ़ाज़त करती है। मैंने यह नई बात सीखी है क्योंकि मुझे पहले इस बात का इलम नहीं था।

★ एक मेहमान ने वर्णन किया कि आपकी जमाअत और मस्जिद की इमारत ने मुझे बहुत मुतास्सिर किया, वह ख़ूबसूरत है। हम इस दावतनामा के बहुत शुक्रगुज़ार हैं।

★ एक मेहमान ने कहा कि इस मस्जिद को बनता देखकर हम बहुत पुरजोश हैं हमें इस इलाक़ा में रहते हुए चालीस वर्ष हो गए हैं

2 अक्तूबर 2022 ई (इतवार का दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा। आज प्रोग्राम के मुताबिक़ Zion सेDallas के लिए रवानगी थी। सुबह से ही ज़ायन और दीगर विभिन्न जमाअतों से आए हुए अहबाब जमाअत, मर्द-ओ-महिलाओं की एक बड़ी संख्या अपने प्यारे आक़ा को अल-विदा कहने के लिए जमा थी।

10 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। प्रोग्राम के मुताबिक़ लोकल मज्लिस-ए-आमला जमाअत ज़ायन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के साथ तस्वीर खिचवाने की सआदत पाई। ट्रांसपोर्टेशन टीम और ज़याफ़त टीम ने भी ग्रुप तसावीर बनवाने का शरफ़ पाया।

महिलाएं एक अलैहदा हिस्सा में खड़ी थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अज़राह शफ़क़त उस जगह की तरफ़ तशरीफ़ ले आए। अस्सलामो अलैकुम हुज़ूर की आवाज़ें प्रत्येक तरफ़ से आ रही थीं। बड़े जज़बाती मुनाज़िर थे। हुज़ूर अनवर अपना हाथ बुलंद करके उनके सलाम का जवाब दे रहे थे। प्रत्येक तरफ़ से पुरजोश नारे बुलंद हो रहे थे। आगे कुछ फ़ासले पर बच्चियाँ अल-विदाई दुआइया नज़्में पढ़ रही थीं। इसके बाद हुज़ूर अनवर बच्चियों के पास तशरीफ़ लाए। फिर यहां से इस हिस्सा की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जहां मर्द हज़रात खड़े थे और बड़े पुरजोश अंदाज़ में नारे लगा रहे थे। हुज़ूर अनवर अपना हाथ बुलंद करके अपने इन उश्शाक के वालहाना नारों और सलाम का जवाब दे रहे थे। एक अफ्रीकन दोस्त ग़ैरमामूली जोश ओर पुर शौकत आवाज़ में नारे लगा रहे थे। हुज़ूर अनवर उस दोस्त के पास से गुज़रते हुए कुछ देर के लिए खड़े हुए और फ़रमाया ग़ानीन हो। तो उसने पुष्टि में सिर हिला दिया कि मैं हूँ।

मुरब्बी सिलसिला अमरीका मुसव्विर अहमद साहिब अपने नोमोलूद बेटे को लिए हुए खड़े थे। हुज़ूर अनवर ने बच्चे को प्यार किया और इसके बाद तस्वीर खिचवाने का शरफ़ भी अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बंसरा अलिफ़ लाज़िज़ क़रीबन दस मिनट अपने प्यार करने वालों के दरमयान मौजूद रहे।

इस दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अज़राह-ए-शफ़क़त डाक्टर तनवीर अहमद साहिब से कुछ उमूर पर गुफ़्तगु फ़रमाई। डाक्टर तनवीर अहमद बतौर डाक्टर क़ाफ़िला के साथ डयूटी पर थे।

डलास को रवानगी

11 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवरने दुआ करवाई और सबको अस्सलामु अलैकुम कहा और क़ाफ़िला इंटरनैशनल एयरपोर्ट शिकागो के लिए रवाना हुआ 12 बजकर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की शिकागो एयरपोर्ट पर तशरीफ़ आवरी हुई। हुज़ूर अनवर एक प्राईवेट लाऊंज में तशरीफ़ आए।

जमाअत अहमदिया अमरीका ने Chicago से Dallas तक सफ़र के लिए American Airlines के एक चार्टर्ड जहाज़ ERJ175 का इंतेज़ाम किया था। इस जहाज़ में 76 सीटें थीं। यह जहाज़ लाऊंज के सामने चंद क़दम पर पार्क किया

शेष पृष्ठ 8 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 11 May 2023 Issue No. 19

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अह-मदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

रिपोर्ट तर्बियती जलसा

तिथि 05 अगस्त 2022 को नमाज़-ए-जुमा के बाद अहमदिया मस्जिद सालेहनगर आगरा, यू . पी में विनीति की सदारत में एक तर्बियती जलसा आयोजित हुआ। जलसे का आरंभ तिलवात क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो कि श्रीमान सरफ़राज़ अहमद साहब ने पढ़ी। इसके पश्चात रिज़वान अहमद साहब ने नज़्म पढ़ी। इसके पश्चात विनीत ने तिलवात क़ुरआन-ए-करीम और चंदों के निज़ाम की पाबंदी के विषय मे सम्बोधन किया। दुआ के साथ जलसा समाप्त हुआ।

सय्यद आफ़ाक अहमद
मुअल्लिम इसलाह व इरशाद आगरा

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन ॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

के साथ ताल्लुक़ रखते थे हल हो चुके हैं। न हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी ऐसा ख़्याल किया न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी ऐसा ख़्याल किया न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी ऐसा ख़्याल किया और न हमारी जमात को कभी ऐसा ख़्याल करना चाहिए । ये चीज़ें इलाही सिलसिलों के साथ जुड़ी हैं और कभी कोई रुहानी जमाअत उनके बग़ैर तरक़्क़ी नहीं कर सकती। एक दूसरी जगह अल्लाह तआला इन क़ुर्बानियों की नौईयत वर्णन करते हुए फ़रमाता है وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ۔ अर्थात हम ज़रूर तुम को किसी क़दर ख़ौफ़ और भूख और अम्वाल और जानों और फलों के नुक़्सान के ज़रीया आज़माऐंगे और हे हमारे रसूल तो उन लोगों को जो इन अबतेलाओं के समय पर अपने रास्ता से हटे नहीं और मज़बूती से दीन की राह में क़ुर्बानियां करते चले जाएं हमारी तरफ़ से बशारत और ख़ुशख़बरी दे दे कि वे अपने उद्देश्य में कामयाब होजाएंगे। ग़रज़ जब तक कोई क़ौम मरने के लिए तैयार न हो ज़िंदा नहीं हो सकती क्योंकि ज़िंदगी मौत के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती। जब तक दाना मिट्टी में नहीं मिलता शिगूफ़ा नहीं निकलता। बच्चा पैदा नहीं होता जब तक रहम की तारीकियों में से नहीं गुज़रता। इसी तरह कोई क़ौम भी तरक़्क़ी नहीं कर सकती जब तक वह एक मौत इख़्तेयार न करे।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7, पृष्ठ 581)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad